वर्ष: 2023-24

पल्लवी

अंक-11

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल

सत्यमेव जयते

क.रा.बी.नि
ESIC

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

अब आधार नंबर को ईएसआईसी के साथ सीड करें और ढेरों लाभ पाएं जैसे कि

- डिजिटल अपनाएं
- ABHA नंबर का सृजन
  - विभिन्न अस्पतालों के साथ स्वास्थ्य संबंधी रिकॉर्ड साझा करें
  - फाइलों और रिपोर्ट्स को साथ रखने की कोई आवश्यकता नहीं
- सेवाएं व लाभ पाने के लिए पहचान की सरलतापूर्वक पुष्टि

अंक–11

पल्लवी

वर्ष – 2023–24

संपादक मंडल

संरक्षक

श्रीमती अभिलाषा झा

उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक

श्री अभिनव प्रकाश

सहायक निदेशक (राजभाषा)

सम्पादक मण्डल

श्री कामेश्वर दूबे, सहायक निदेशक

श्री संकल्प नंदा, सहायक निदेशक

टंकण सहयोग

श्री वरुण गोड़, अवर श्रेणी लिपिक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। लेखों एवं रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक एवं रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

पंचदीप भवन, प्लॉट नं. पी–09, सड़क सं.–07,

एम.आई.डी.सी. मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुंबई – 400 093

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग,
नई दिल्ली–110002

क.रा.बी.नि
E.S.I.C.

श्री कमल किशोर सोन
महानिदेशक

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल की हिंदी गृह पत्रिका **'पल्लवी'** के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। उप क्षेत्रीय कार्यालय की पत्रिका ने एक दशक की यात्रा में महत्वपूर्ण सोपान तय किए हैं। पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हितकारी और सरकारी कामकाज के लिए एक आदर्श मार्गदर्शक सिद्ध हो, यही मेरी कामना है।

पत्रिका प्रकाशन के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय के रचनाकारों और संपादक मण्डल को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कमल किशोर सोन

कमल किशोर सोन

श्रीमती अभिलाषा झा
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
मरोल, मुंबई. 400093

क.रा.बी.नि
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग,
नई दिल्ली–110002

श्री रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'पल्लवी के 11 अंक का प्रकाशन सराहनीय है। पत्रिका का प्रकाशन न केवल कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है बल्कि निगम की कार्यप्रणाली और राजभाषा हिन्दी के संवैधानिक पक्ष से भी परिचित कराता है। महाराष्ट्र में हिंदी अपने घर जैसा सहज परिवेश पाती है। मराठी के सानिध्य में इसका भाषा वैभव और भी बढ़ जाता है।

आशा है कि इस भाषायी संगम से पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल रहेगी।

पत्रिका प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(रत्नेश कुमार गौतम)

श्रीमती अभिलाषा झा
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
मरोल, मुंबई. 400093

क.रा.बी.नि
E.S.I.C.

बीमा आयुक्त का कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पश्चिम अंचल, अहमदाबाद
(राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व गोवा)

श्री रामजी लाल मीणा
बीमा आयुक्त (पश्चिम अंचल)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल अपनी हिंदी गृह पत्रिका 'पल्लवी' के 11 वां अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। यह उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल के कार्मिकों के राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान और समर्पण को प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करना गृह पत्रिका के उद्देश्य के सफल होने की दिशा में एक संगठित प्रयास है। पत्रिका के माध्यम से रचनाधर्मी कार्मिकों को अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का एक मंच मिलता है जिससे भाषायी कौशल में भी वृद्धि होती है। राजभाषा के प्रचार–प्रसार में गृह पत्रिका प्रेरक का काम करती है। मैं इसके प्रकाशन से जुड़े कार्यालय के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसके अनवरत प्रकाशन की कामना करता हूँ। आशा है यह अंक राजभाषा के विकास एवं प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध होगा ।

शुभकामनाओं सहित !

रामजी लाल मीणा

श्रीमती अभिलाषा झा
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
मरोल, मुंबई. 400093

क.रा.बी.नि
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
क्षेत्रीय कार्यालय,
पंचदीप भवन,
108, एन.एम.जोशी मार्ग,
लोअर परेल, मुंबई–400013

अनिल कुमार साहू
अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपका कार्यालय विभागीय हिंदी पत्रिका "पल्लवी " के 11वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। मानव के पास प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ कृति होने के कारण अपनी संवेदना व्यक्त करने के कई माध्यम है, जिसमें लेखन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। आपकी गृह पत्रिका "पल्लवी" सभी अधिकारी व कर्मचारीगण को अपने विचारों, अनुभवों को व्यक्त करने का एक अच्छा अवसर प्रदान करती है। इसके प्रकाशन से राजभाषा का प्रचार–प्रसार तो होता ही है, साथ ही कार्यालय के अन्य लोग भी राजभाषा के प्रयोग करने के लिय प्रेरित होते हैं। पत्रिका का उद्देश्य कार्मिकों में अन्तर्निहित मौलिक प्रतिभा को प्रस्तुत करना, परिष्कृत करना तथा सम्मानजनक स्थान दिलाना होता है तथा कार्यालय के क्रियाकलापों व गतिविधियों की एक समेकित झलक भी प्रस्तुत करती है। आशा है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल कि गृह पत्रिका का यह अंक अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

अनिल कुमार साहू

श्रीमती अभिलाषा झा
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
मरोल, मुंबई. 400093

संरक्षक की कलम से

श्रीमती अभिलाषा झा
उप-निदेशक (प्रभारी)

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल की पत्रिका **'पल्लवी'** का यह ग्यारहवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। मरोल कार्यालय राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को सुनिश्चित करने तथा इसके प्रचार–प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है। ग्यारहवें अंक का प्रकाशन इसी प्रतिबद्धता का द्योतक है। चूँकि यह अंक ई–पत्रिका के माध्यम से भी प्रकाशित की गई है, अतः मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इससे पत्रिका के पाठक–वर्ग का दायरा न केवल बढ़ेगा ही, बल्कि भारत सरकार की 'डिजिटल इंडिया' मुहिम की दिशा में एक सार्थक प्रयास होगा।

हमारा कार्यालय मरोल हिंदी भाषा वर्गीकरण के अंतर्गत 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत आता है एवं मराठी भाषा की लिपि एवं हिंदी भाषा की लिपि एक ही अर्थात् देवनागरी होने से मराठी भाषा–भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एक मंच पर लाने का भी प्रयास है, लिहाज़ा इस पत्रिका के द्वारा विभिन्न भाषा–भाषी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है। कर्मचारियों द्वारा इस अंक में किया गया रचनात्मक योगदान उत्साहवर्धक है, जिससे ज़ाहिर होता है कि हमारे कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य करने की क्षमता तो मौजूद है, इसी क्षमता को सरकारी कामकाज हिंदी में करने हेतु मानसिक बदलाव एवं समायोजन की आवश्यकता है।

कर्मचारियों द्वारा इस अंक में किया गया रचनात्मक योगदान उत्साहवर्धक है, जिससे ज़ाहिर होता है कि हमारे कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की क्षमता तो मौजूद है, इसी क्षमता को सरकारी कामकाज हिंदी में करने हेतु मानसिक बदलाव एवं समायोजन की आवश्यकता है। मानसिक परिवर्तन की इस प्रक्रिया में हिंदी पत्रिकाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इन पत्रिकाओं में योगदान देने वाला रचनाकार अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए अवश्य ही प्रेरित होता है तथा अन्य व्यक्तियों को भी प्रेरित करता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को न सिर्फ हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा, बल्कि उनका ज्ञानवर्धन करते हुए उन्हें मनोरंजित भी करेगा।

संपादक की कलम से....

श्री अभिनव प्रकाश
सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल की विभागीय वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **'पल्लवी'** के ग्यारहवाँ अंक को आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व की अनुभूति हो रही है।

जैसा कि सर्वविदित है कि भारत सरकार ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दे कर इसे संवैधानिक रूप प्रदान किया था, तभी से सरकारी कामकाज हिंदी में करना केंद्र सरकार के अधीन कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का उत्तरदायित्व है। साथ ही हिंदी में कार्य करने से हम सबको गर्व की भी अनुभूति होनी चाहिए क्योंकि इससे राष्ट्र निर्माण में सहयोग होता है।

हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से क.रा.बी. निगम के मरोल परिवार में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अपनी लेखन क्षमता एवं रचनात्मकता संबंधी प्रतिभा पल्लवन प्रदान करने का अवसर भी **'पल्लवी'** में प्राप्त हुआ है।

इसी आशा एवं पूर्ण विश्वास के साथ मैं **'पल्लवी'** हिंदी पत्रिका का ग्यारहवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ कि यह आप सभी सुधी पाठकों के मानस पटल पर एक अमिट छाप अंकित करेगा, आपका ज्ञानवर्धन करेगा एवं मनोरंजन भी प्रदान करेगा तब ही हमारा प्रयास सफल माना जाएगा।

मैं यह भी आशा करता हूं कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं पर सभी पाठकगण अपनी बहुमूल्य सुझावों एवं फीडबैक देकर पत्रिका के भविष्य में आने वाले अंको को और भी बेहतर बनाने में हमें सहायता प्रदान करेंगे।

अनुक्रम

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	नाम में क्या रखा है?	श्रीमती अभिलाषा झा	01
2.	फिल्मी नगरी	श्री पी.के.सिन्हा	2–3
3.	वो रात...	श्री अभिनव प्रकाश	4–6
4.	जीवन में खेल का महत्व	श्री सोमनाथ सुधांशु	7–8
5.	मेरी नज़र से भारतीय रेलवे	श्री विशाल माळी	09
6.	भारत का कृषि क्षेत्र एक दृष्टि	सुश्री रूपेश गुप्ता	10–11
7.	शिक्षा भी संस्कार भी	श्री कामेश्वर दूबे	12–13
8.	साहब मैं जिंदा हूं	श्री संकल्प नंदा	14–15
9.	योग	श्री जय शंकर तिवारी	16
10.	मेरी नज़र में मरोल कार्यालय सुरक्षा व आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित एक निगम कार्यालय	श्री मनोज कुमार	17–18
11.	भारत को डिजीटल बनाने में हिंदी टाइपिंग की भूमिका	श्री वरूण गोड़	19
12.	इकीसवी सदी और महिला सशक्तिकरण	श्री दीपक यादव	20–21
13.	घर की लक्ष्मी	श्री अमित कुमार	22
14.	अयोध्या	श्री अरूण कुमार	23–24
15.	जिंदगी से पहचान	श्री काशीनाथ चव्हाण	25
16.	अनुवाद	अतिथि लेखक	26–27
17.	क्या किया जाए....	श्री अंकित कुमार	28
18.	एक घातक शस्त्र–चाइनीज मांजा	श्री मोहन सोनेकर	29–30
19.	जिंदगी का गणित	श्री मोहन सोनेकर	31
20.	भीड़	श्री मुकेश कुमार दूबे	32
21.	राजभाषा पखवाड़ा झलकियाँ		33
22.	पुस्तक प्रदर्शनी, महिला दिवस की झलकियाँ		34–35
23.	वि.रा.का.स., गणतंत्र दिवस की झलकियाँ		36
24.	खेल–कूद विजेता		37
25.	वाक्य अनुवाद (हिंदी–मराठी)		38
26.	शब्दानुवाद (मराठी–हिंदी)		39
27.	हिंदी प्रोत्साहन पुरस्कार–सूची		40–43
28.	आपकी प्रतिक्रियाएँ		44

नाम में क्या रखा है?

श्रीमती अभिलाषा झा
उप-निदेशक (प्रभारी)

गुलाब को यदि किसी और नाम से भी पुकारा जाए
तो भी वह गुलाब ही रहेगा, ऐसा शेक्सपीयर ने कहा,
पर यदि उनका खुद का नाम टॉम, डिक या हैरी होता
तो शायद शेक्सपीयर भी ''द शेक्सपीयर'' नहीं हो पाते।
जी साहब, बहुत कुछ रखा हुआ है इस नाम में।
यूसूफ खान दिलीप कुमार नहीं बने होते,
मेहरुनिसा मीनाकुमारी नहीं होती
और कुलभूषण पंडित की अदा ''जानी राजकुमार'' सी ना होती।
शिवाजीराव गायकवाड़ में वो रजनीकांत वाली स्पेशल
इफैक्ट्स की फ़ीलिंग ना आती।
और इंकलाब राय का इकबाल उतना बुलंद न होता
यदि वो अमिताभ बच्चन न कहलाते।
इंसानों के ही नहीं,
शहरों और सड़कों के नाम को
बदलने की राजनीति में
बाज़ी मार लेने में पक्ष और विपक्ष का घमासान न होता..
प्रयागराज, पुडुचेरी, चेन्नई, गुरुग्राम के नए नाम
अभी-अभी ज़बान पर चढ़ने लगे थे कि
गौतमबुद्ध नगर, उधम सिंह नगर, हरिगढ़, अहिल्यानगर की लंबी फेहरिस्त आ गई।
और तो और, उपनगरीय रेलवे स्टेशनों के नाम भी जल्द ही बदलने वाले हैं -
मुंबई सेंट्रल अब जगन्नाथ शंकर सेठ तो किंग्स सर्किल तीर्थंकर पार्श्वनाथ बन जाएगा।
इंडिया भी आधिकारिक तौर पर भारत कहलाने की तैयारी में है।
समसामयिक परिवेश को देखते हुए ब्रांड नेम में भी बहुत बदलाव आए हैं-
फेयर एंड लवली अब ग्लो एंड लवली बन चुका है।
तो ट्विटर की नीली चहकती चिड़िया कठोर "X" की सलाखों के पीछे आ गई।
अपने कर्मचारी राज्य बीमा निगम के स्थानीय कार्यालय भी
तो शाखा कार्यालय कहलाए जाने लगे हैं।
और बीमा निरीक्षक - सामाजिक सुरक्षा अधिकारी।
बच्चों के नाम अब बुआ या दादा की मर्जी पर नहीं छोड़े जाते,
इस विषय पर महीनों मंथन के बाद
नवजात शिशुओं के विशिष्ट नाम रखे जा रहे हैं।
जो उनके साथ माता-पिता की विशेषता के परिचायक बनते हैं।
शादी तय होते ही # का नाम सोचा जाता है
जैसे # रालिया # दीपवीर या # विरुष्का।
तो साहब अब यही समझ में आ रहा है कि
नाम में कुछ नहीं, बहुत कुछ रखा है।
तभी तो अब नाम गुम जाएगा नहीं बल्कि मेरे बाद मेरा नाम ही रह जाएगा,
यह कहना ज़्यादा ठीक होगा।

फिल्मी नगरी

श्री प्रसून कुमार सिन्हा
उप निदेशक

रंगीन शहर की रंगीन रातें और आँखों में रंगीन सपने लिए हर रोज मुंबई में आते युवा भारत के युवक और युवतियाँ। पहला कदम चर्चगेट और सी. एस.टी. रेलवे स्टेशनों पर पड़ते, लंबी साँसे लेते दोनो हाथ फैलाते और फिर मुंबई की रंगीनियों पर अपने अधिकार जमाते ये युवा वर्ग। ऐसा ही एक युवक संजय, जो अपने नए सपने संजोए हीरो के किरदार निभाने उत्तर भारत के चंडीगढ़ शहर से मुंबई शहर में आया था। शहर में उतरते ही इस सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के पोस्टर को देख मन ही मन मुस्कुराया जैसे अगले सदी का नायक कोई और नहीं वो स्वयं है। आंखों में बड़ी उम्मीदें, बड़े आत्मविश्वास लिए ऊँची उड़ान के सपने और बुलंद विचारों से ओत–प्रोत संजय अपने पुराने शहर को छोड़, रिश्ते–नाते को पीछे छोड़ आ चुका था। एक सिनेमा की नगरी में जहाँ हर पल किसी न किसी की तकदीर बनती और बिगड़ती है। संजय ने चंद कपड़ों और कुछ पैसों के साथ इस शहर में उतरते ही अपने बचपन के दोस्त को फोन लगाया और फिर "प्रतीक्षा" बंगले के बगल में चाय की दुकान पर दोनों की मुलाकात हुई। संजय का दोस्त प्रतीक्षा के ठीक पीछे वाली गली में चाय की दुकान चलाता था और बगल की ही चौक में रहता था। कमाई चाय की दुकान की अच्छी थी, मगर रहने की दिक्कत तो मुंबई की आम समस्या जिससे वो भी भलीभाँति समझता था और उसका सामना भी कर रहा था।

संजय का दोस्त अमित पहले उसे अपने घर ले गया। 20 बाय 10 की खोली बाहर के नल और सुलभ शौचालय से फ्रेश होकर संजय अमित के साथ मुंबई की फिल्म नगरी की यात्रा को निकल पड़ा। पूरे दिन इस शहर को संजय देखता रहा। लोगों की भागदौड़ में खुद को तलाशता रहा। शाम निकल चुकी थी, रात हो चुकी थी। दिन शुक्रवार का था, शहर के सभी रेस्टॉरेंट और बार में एक अलग तरह की हँसी ठहाके और आवाज गूंज रही थी और संजय को ये नज़ारे मुग्ध कर रहे थे।

अमित ने संजय से पूछा– "पीने का इरादा है? संजय ने हाँ में सर हिलाया और दोनों बांद्रा के तलाशा बार में आए। रात के नौ बज चुके थे। थकान बार के जाम ने दूर कर दी थी। जाम में बर्फ के टुकड़े को डालते संजय ने अपने बचपन के दोस्त अमित से बोला– 'यार दिल खुश हो गया।' यार हो तो ऐसा जो जन्नत का मज़ा दिलाये। रात के 12 बज चुके थे और संजय अमित के साथ था पूरा दिन। अब दोनों ने ऑटो पकड़ा फिर अंधेरी के अपने चॉल पर आए। रात कब बीती पता नहीं चला। जब नींद खुली तो संजय ने देखा दिन के 9 बज रहे थे। अमित नाश्ता और नहाने का पानी रख अपनी दुकान जा चुका था। संजय नहाने और नाश्ता करने के बाद अपने दोस्त से मिलकर काम की तलाश में फिल्म इंडस्ट्री के चक्कर लगाने लगा। तरह–तरह के कलाकारों, फिल्मकारों से मिलता रहा, अपनी एलबम दिखाता रहा, ऑडिशन देता रहा फिर वापस घर। संजय के पैसे और विश्वास धीरे– धीरे कम होने लगे और संजय को अपने दोस्त

के यहाँ रहने में भी शर्म आने लगी। आखिरकार दोस्त की सलाह पर संजय ने दोस्त की दुकान के बगल में, पान की दुकान खोल डाली, चूँकि दुकान एक बार के बगल में थी संजय दिन भर फिल्म की तलाश में घूमता और रात को पान की दुकान चलाता। धीरे–धीरे संजय ने टीवी के फिल्मों में काम भी किए मगर पहचान नहीं मिल पाई। मुंबई के इस भीड़ भरे शहर से वह युवक खुद को अलग नहीं कर पाया और इसी भीड़ का हिस्सा हो गया। हाँ इतनी सी बात हुई वह पान की दुकान से अच्छा कमा लेता है। रात को दुकान पर और दिन में फिल्मनगरी के काम करता है। अपनी पहचान की तलाश में वह आज भी पर्दे पर स्वयं को देखने की तमन्ना रखता है। इस शहर में वह भी एक चॉल में रहता है, सुबह से रात तक व्यस्त रहता है। अपने सपनों को वह आज भी संजोए बैठा है। अपने आत्मविश्वास को उसने आज भी बरकरार रखा है। धन्य है यह शहर जो रात की कमाई से उसे पूरे दिन की एनर्जी दे रहा है। संजय की उम्मीद को जिंदा रखा हुआ है। ये भारत के युवा हैं, और यह शहर युवाओं का है इस युवा को एक धड़कन मिल गई है, जिसका नाम सोनिया है। अब संजय खुश है कि दिन में हीरो के सपने पूरे करने की कोशिश कर रहा है और रात में सपने साकार करने के लिए साधन से कमाई करता है। वाह रे! मुंबई। जो हर युवा को उसकी धड़कन से मिलवाता है, उसकी धड़कन को दिल में कायम रखता है, यहाँ युवा जीते हैं सपनों के साथ और मरते भी हैं इन्हीं सपनों के साथ। वाह रे! यह शहर मुंबई मेरी जान जो जीना ही नहीं मरना भी सिखाता है, सपनों के साथ। वाह रे! यह शहर मुंबई, मुंबई मेरी जान।

संजय अब इस शहर में व्यस्त है और मग्न भी। वह सप्ताह में अपनी गर्लफ्रैंड सोनिया के साथ घूमने जाता है, दिन में फिल्मनगरी और रात में पान की दुकान चलाता है, अब वह शादी करने वाला है। एक नए घर की तलाश में है, उसके लिए वह दिन–रात की कमाई कर रहा है। भले.. 70 mm स्क्रीन पर उसके चेहरे दिखे न दिखे पर आज वह अपनी सोनिया का हीरो है। धन्य है ये शहर मुंबई जो शाम को जाम भी पिला रहा है और संजय की धड़कन भी जिंदा रखा हुआ है। सुबह से शाम तक उसकी भूमिका किसी सदी के नायक, किसी फिल्मी दुनिया से कम नहीं, जहाँ हर रोज संजय सुबह–शाम एंग्री यंग मैन का रोल निभा रहा है। संजय के सपने आज भी जिंदा हैं और वह हकीकत की इस मायानगरी में आज भी अपने सपने में जी रहा है, वाह रे! 20 बाय 10 के चॉल में ही सही पर सदी के नायक की तरह जीवन जिया जाता है। यहाँ लोग जीते जी सपने देखते हैं और मरते भी हैं अपने सपनों के साथ। वाह रे यह शहर मुंबई यह है लोगों के दिल की धड़कन यह है मुंबई शहर, ये है मुंबई मेरी जान।

***

वो रात .....

श्री अभिनव प्रकाश
सहायक निदेशक ([illegible])

यूँ तो देहरादून अन्य पहाड़ी नगरों की तरह भारत का एक ऐसा पहाड़ी नगर है, जिसकी प्राकृतिक सुंदरता और खुशगवार मौसम के कारण बार–बार वहाँ जाने का मन करता है। देहरादून की अनेक खासियतों में वहाँ के कई मनभावन पर्यटन स्थल भी हैं, जैसे – एफ. आर. आई. तपकेश्वर मंदिर, बौध विहार मंदिर व और भी कई अन्य स्थल। बहरहाल देहरादून अब कोई नई जगह नहीं रह गई थी मेरे लिए, क्योंकि मेरे बड़े भैया की पहली नौकरी इसी शहर में लगने की वजह से मैं भी उनके साथ चला गया। क्योंकि बचपन से ही न तो उन्हें और न ही मुझे ही एक दूसरे के बिना रह पाना गवारा था। पिछले 6 महीनों से यहीं रह रहा था, या यूँ कहें कि बस यहीं का होकर रह गया था। भैया ने मुझे ऐसा एहसास कराया जैसे नौकरी उनकी नहीं मेरी लगी हो। नई–नई आकर्षक जगह पर घूमने का शौक तो बचपन से ही सबको होता है, मुझे भी है, उस वक्त और आज भी। जिससे भाई के द्वारा दिए गए पॉकेट मनी तथा उनके ऑफिस जाने के बाद घर में मिली स्वतंत्रता ने तो जैसे आग में घी का काम किया। वहाँ शायद ही कोई ऐसी जगह बची हो, जहाँ घूमने मैं नहीं गया। शायद ही कोई थिएटर बचा हो, जिसकी बालकनी की सीट मुझसे अछूती रही हो। पास लगे शहर मसूरी का कैम्प्टी फॉल, पिकनिक स्पॉट, प्राकृतिक दृश्य, वन अनुसंधान केंद्र (एफ. आर. आई.), भारतीय मिलिट्री अकादमी संग्रहालय और न जाने कहाँ–कहाँ घूमता रहा बस यूँ ही घूमता रहा निरुदेश्य। अहा!। कितना अच्छा होता है कि कब भैया दफ्तर को जाएँ और मैं अपने परम मित्रों के साथ कभी ना खत्म होने वाली मंज़िल की ओर।

कुछ दिनों बाद, मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरा दाखिला देहरादून के कॉलेज में कर दिया गया। आखिरकार माँ की तरह मेरे भविष्य की चिंता भैया को भी थी। नहीं थी तो सिर्फ मुझे। अब कॉलेज जाना पड़ता था मसूरी की पहाड़ियाँ एवं नंदा देवी पर्वत पास होने की वजह से यहाँ आस–पास के इलाके की सुबह की हाड़माँस को जमाने वाली सर्दी मानो हमारे शरीर को पिघला देती थी।

सुबह के 6:00 बजे कॉलेज के लिए गर्म कमरे से बाहर निकलकर जाना ऐसा लगता, जैसे नंगे पाँव पहाड़ पर चढ़ रहे हों। हाँ, कॉलेज तो मेरे लिए पहाड़ ही था और पहाड़ों की रपटीली राहें हैं व प्रोफेसरों के उबाऊ लेक्चर में कोई खास अंतर मुझे नहीं दिखता। वहाँ के प्रोफेसर और अध्यापकों को क्या कहें के, आइंस्टीन लुक। उन्होंने तो जैसे श्रीमदभगवदगीता पर हाथ रखकर कोई कसम ही खा रखी हो कि जो पढ़ाऊँगा, अंग्रेज़ी के कठिन शब्दों में ही पढ़ाऊँगा। आखिरकार शिक्षण–मंडली में अपनी साख का जो सवाल था। किसी तरह 12वीं तक आते–आते तब तक मेरे अपने शहर के स्कूल में अंग्रेज़ी से कम ही पाला पड़ा था, लेकिन अंग्रेज़ी में मानो अब

अपनी सारी कसर निकालने की ठान ली हो। दिन की सबसे पहली क्लास अंग्रेज़ी की होती थी और पूरा दिन खराब जाता था, न जाने क्यों, वह क्लास मुझे जेल–सी प्रतीत होती।

बहरहाल, खुरदरी सड़क पर चलती हुई बैलगाड़ी के समान मेरे कॉलेज के दिन गुज़रने लगे। मैंने अंग्रेज़ी की क्लास के कई लेक्चर जानबूझकर छोड़ दिए। मैं और मेरे नए–नए खास किस्म के दोस्त लेक्चर सुनने के बजाय कॉलेज के खेल के मैदान में क्रिकेट के गुर सीखते रहे। क्लासें छूटती रहीं, हम लोग भले ही क्षण भर के लिए खुश हो रहे हों, मगर मेरी माँ के सपने टूटते रहे। वो सपने जो उसने मुझे गाँव की चारदीवारी से बाहर निकालकर देहरादून भेजते वक्त देखे थे। कितनी खुश थी माँ तब, मगर मैं उसकी खुशियों पर तुषारापात करता रहा। नई जगह के क्षणभंगुर और आकर्षक माहौल में अपनी माँ के सपनों को भूल गया था। हाँ भूल गया था कि कितनी तकलीफें सहने के बावजूद रत्ती–रत्ती जोड़कर, उसने अपने सपनों को तोड़कर मुझे हमेशा खुश रखने की, कोशिश की, हमेशा प्रेरित करतीं कुछ बनने के लिए, लेकिन मैं रुका रहा। इसी बीच भैया की नौकरी भारतीय रेलवे में स्टेशन मास्टर के पद पर अहमदाबाद डिविज़न में लग गई। नौकरी काफी अच्छी थी, उन्हें जाना पड़ा। भैया मुझे अपने साथ ले जाना चाहते थे, परंतु इतिहास के पन्नों पर दर्ज है कि न चाहते हुए भी उन्हें कई बार मेरी ज़िद के आगे झुकना पड़ा था और आज भी झुकना पड़ा। मुझे वह रात अब तक याद है जब भैया ने आखिरी बार मुझे समझाया था, गला रूँध गया था और उनके भरे गले ने वाक्यों के टुकड़े–टुकड़े कर दिए, लेकिन वो बातें मेरे ज़ेहन मेरे स्मृति–पटल पर अब तक अमिट हैं और शायद हमेशा रहेंगी। "अभिमन्यु, यार तुमने अपने जीवन का मज़ाक बना रखा है। मेरी बातों का नहीं, तो कम से कम माँ की बातों का या अपने भविष्य का कुछ तो ख्याल कर।

ज़िंदगी बार–बार मौका नहीं देती। इतना कहकर हर महीने पॉकेट मनी भेजते रहने का वादा करके वे देहरादून की नौकरी छोड़कर अहमदाबाद चले गए।

उस रात देहरादून रेलवे स्टेशन से लौटते वक्त पहली बार पैदल चलकर, बारिश में भीगकर, अपने कॉलेज के हॉस्टल में पहुँचा, न जाने क्यों आज हॉस्टल की लाइटें गुल थीं, कमरे में अँधेरा था, एकदम घुप्प अँधेरा। यह अँधेरा बिल्कुल मेरे जीवन में पहले अँधियारे की तरह था, जैसे कोई काली अमावस की रात हो। मूसलाधार बारिश की वजह से सभी छात्र सोए हुए थे। वातावरण में शांति व्याप्त थी। अगर कहीं शांति नहीं थी, तो केवल मेरे मन में!

पहली बार मालूम पड़ा की मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ना कितना दुष्कर होता है। भैया के कहे शब्द मेरे कानों में पिघले हुए गर्म शीशे की तरह चुभते रहे। सुना था, रोकर मन हल्का हो जाता है, सब किताबी बातें हैं। मन भारी ही रहा। थोड़ी देर में कमरे की मोमबत्ती बुझ गई, पुनः जलाकर भी क्या करता? अब तो अँधेरा ही अच्छा लगने लगा था। मोमबत्ती तो बुझ गई, लेकिन मैं सारी रात पश्चाताप की अग्नि में धू–धू कर जलता रहा। मगर अब अँधेरे से भय न था, क्योंकि मेरे जीवन में व्याप्त अँधेरा उससे कहीं ज़्यादा भयानक व गहरा था। सुबह की किरणें कमरे के अँधकार को तो मिटा गईं, लेकिन अपने जीवन के अँधकार को तो सिर्फ मैं ही

मिटा सकता था। सूर्य की किरण ने कमरे के अँधेरे को मिटाकर जैसे मुझे एक नई सीख दी हो कि अब तुम्हारी बारी है।

सच में उस रात ने मेरे पूरे जीवनशैली ही बदल कर रख दी, दोस्तों की हैरानी जायज़ थी। अब मेरी पॉकेट मनी तक किताबों में फूँकने लगी थी। सभी दोस्तों ने, जो कभी वादे करते हुए नहीं थकते थे, अब नाराज होकर कन्नी काटने लगे, मगर मुझे अब कोई गम ना था कोई परवाह न थी। एक महीना शेष रहने के कारण मैं स्वयं उत्साह और आत्मविश्वास से खुद को भर लिया और परीक्षा की तैयारी में लग गया। बिना घड़ी देखकर पढ़ने की आदत लग गई थी, समय की जैसे परवाह ही न हो, कब सुबह से शाम और कब शाम से रात हो जाती, पता ही नहीं चलता। पढ़ते–पढ़ते सो जाता, मगर दूसरे ही पल फिर उठकर पढ़ने लगता, मानों परीक्षाएँ कल से ही शुरू हो रही हों; परंतु मैं संत कबीर का दोहा भूल गया था; "धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आएँ फल होय।"

अपने एक महीने के अथक प्रयास के बावजूद मैं ग्रेस में दिए गए अंकदान की बैसाखी से पास हो पाया था।

मैं नहीं जानता, ये परीक्षा फल का सदमा था या मादा एनफिलिस का वरदान, जो मुझे मेरी हमेशा चाहने वाली बीमारी मलेरिया ने अपनी आगोश में ले लिया। आखिरकार मेरी बीमारी की खबर और ममता ने माँ को देहरादून आने पर विवश कर दिया।

मैं नहीं जानता यह डॉक्टर की नमीयुक्त गोलियों का दम था या मेरी माँ की आँखों की नमी का। मैं निर्धारित समय से पहले ही ठीक हो गया, बिल्कुल अपने जीवन की तरह। एक नवीन पुनर्जीवन! माँ की आँखों में आज भी वही चमक थी जो पहले थी, ये और बात थी की झुर्रियों की लकीरें अब गहरी हो गई थी। मगर मैं खुश था, माँ भी, क्योंकि उसके जीवन की एक बहुत बड़ी झुर्री अब मिट गई थी। हमेशा हमेशा के लिए।

प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती।

– सुभाषचंद्र बोस

जीवन में खेल का महत्व

श्री सोमनाथ सुधांशु
उप निदेशक

मुंबई ! वह शहर जहां न दिन का पता है, न रात का । एक तरफ सड़कों पर ट्रैफिक, दूसरी तरफ लोकल ट्रेन में चढ़ने की जंग, और बीच में अगर काम की बात करें तो हर किसी की ज़िंदगी एक ऐसी भागमभाग में बसी है, जहां समय का मोल कोई नहीं जानता। पर क्या आपने कभी सोचा है कि इस कोलाहल में एक सुपरहीरो छिपा हुआ है, जो आपकी मदद कर सकता है? और वो सुपरहीरो है... 'खेल'! हां, आपने सही सुना। बस थोड़ा सा खेल और ज़िंदगी में थोड़ी ताजगी भरी जा सकती है ।

मुंबई की ज़िंदगी में बैठने का एक अजीब सा चलन है । ऑफिस में बैठो, ट्रैफिक में बैठो, लोकल ट्रेन में खड़े रहो (क्योंकि सीट तो सपना है!), और फिर घर जाकर सोफे पर बैठो । ऐसे में शरीर सोफे के पैटर्न में ढलने लगता है और आपको खुद को सोफे से बाहर निकालने का कोई बहाना नहीं मिलता । पर क्या होगा अगर हम कहें कि खेल आपको इस सोफे से बाहर निकालने का एक अच्छा तरीका है । जी हां ! एक छोटी सी जॉगिंग, पार्क में बैडमिंटन या क्रिकेट खेलकर आप खुद को एक्टिव रख सकते हैं। और अगर आपके पास खेलने के लिए कोई पार्टनर नहीं, तो चिंता मत करो, गली के बच्चे हमेशा साथ मिलकर क्रिकेट खेलने को तैयार रहते हैं । बस इस उम्र में कहीं बच्चे आपको अंकल या आंटी बुला लें तो बुरा मत मानियेगा । और वैसे भी हमने भी तो अपने बचपन में बड़े लोगों को यही कहकर तो संबोधित किया था । याद है ना, ओ अंकल जरा बॉल पास करना । कुछ याद आया ।

अब बात करें तनाव की। मुंबई में हर किसी के पास काम की भरमार है, चाहे वह ऑफिस का हो, घर का हो या फिर उस ट्रैफिक में फंसा हुआ हो। दिन भर की भागदौड़ के बाद जब आप थक कर घर वापस आते हैं, तो एक पल के लिए लगता है कि आप बस वहीं लेट जाएं और कहीं दूर चले जाएं । मगर क्या होगा अगर हम कहें कि खेल से आपकी सारी थकान दूर हो सकती है। एक छोटी सी एक्सरसाइज, एक जॉगिंग, या फिर ज़ुम्बा क्लास में कुछ देर झूमकर आप अपने दिमाग को रिफ्रेश कर सकते हैं। जब आप थोड़ी देर तक खुद को व्यस्त रखते हैं, तो न सिर्फ आपका शरीर एक्टिव होता है, बल्कि मानसिक शांति भी मिलती है। खेलों से मिलने वाली एंडोर्फिन्स (जो कि खुश रखने वाले हार्मोन हैं) से दिनभर की तनाव की भावना खत्म हो जाती है। और सबसे अच्छी बात ये है कि यह सब आपको एकदम ताजगी से भर देता है, जैसे किसी ने आपका रिस्टार्ट बटन दबा दिया हो!

मुंबई में दोस्ती का तरीका बहुत ही अलग है। "कल का मुंबई इंडियंस का मैच देखा क्या, सूर्या ने क्या मारा है !" या फिर "तेरे को क्या लगता है, आजकल मेट्रो में ट्रैफिक बढ़ गया है?" यही वह संवाद होते हैं, जो आपकी दोस्ती की शुरुआत बनते हैं। लेकिन क्या होगा अगर हम कहें कि खेल आपको कुछ और नए तरीके से दोस्त बनाने का मौका देते हैं?

जब आप पार्क में फुटबॉल या बैडमिंटन खेलते हैं, तो यकायक ऐसे अजनबी दोस्त बन जाते हैं, जिनसे आप ऑफिस की चाय की जगह गली के नुक्कड़ पर खेलों के बारे में बात करते हैं। यही खेल आपकी सोशल लाइफ को नए रंग देते हैं। और अगर आपके आसपास का कोई एक साथी भी अच्छा क्रिकेट खिलाड़ी है, तो दोस्ती का रास्ता और भी आसान हो जाता है।

अब आप सोच रहे होंगे कि दिन भर की भागदौड़ में खेलों के लिए समय कहां से मिलेगा? लेकिन आपको जानकर ताज्जुब होगा कि 20 मिनट का वर्कआउट, एक छोटा सा रन या फिर योग की क्लास आपके दिमाग को पूरी तरह से ताजगी से भर सकती है। जब आप खेल के बाद ऑफिस लौटते हैं, तो अपने पुराने, थके–थके इंसान की बजाय एक नए, ताजे इंसान की तरह महसूस करते हैं। और इससे ना सिर्फ आपका काम बेहतर होता है, बल्कि बॉस भी सोचता है कि "क्या हुआ, ये तो आज कुछ अलग ही एनर्जी में दिख रहे हैं।"

मुंबई जैसे शहर में, जहां लोग एक दूसरे से टकराते हुए जीते हैं, वहाँ अकेले समय मिलना किसी खजाने से कम नहीं। लेकिन खेल आपको वह अकेलापन भी दे सकते हैं, बिना अकेले हुए । स्विमिंग पूल में अकेले तैरना, या फिर गली में दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलते हुए वह सुकून देना आपको न केवल मानसिक राहत देता है, बल्कि शरीर को भी ताजगी से भरता है। यही वह "मी टाइम" होता है, जब आप अपने तनाव को दूर करते हैं और बस खुद के साथ रहते हैं।

अब आइए बात करते हैं उस सबसे लुभावने चीज़ की, यानी कि नेटफ्लिक्स बिंजवॉचिंग की। आपने जितने भी शो देखे हैं, और जितने भी एपिसोड देखे हैं, अब बस कुछ और नया देखना है । आप एक बार खेल में हाथ आजमाकर तो देखो ! अपने ऑफिस के टीटी टेबल का इस्तेमाल करें, या फिर अपने दोस्त के साथ पार्क में क्रिकेट खेलें। इससे न सिर्फ आपका शरीर सक्रिय रहेगा, बल्कि आपको "फील गुड" का एहसास भी होगा। और आपको यह भी महसूस होगा कि जो मजा आपने कभी नेटफ्लिक्स में पाया था, वह अब आपकी फिटनेस रूटीन में भी आ सकता है।

मुंबई की जीवनशैली में खेल एक सुपरहीरो साबित हो सकता हैं। वे न केवल आपके शरीर को फिट रखते हैं, बल्कि तनाव को भी कम करते हैं, दोस्ती को बढ़ाते हैं, और काम पर आपकी फोकसिंग को भी बेहतर बनाते हैं। तो अगली बार जब आपका दिन भारी लगे, या आप खुद को थका हुआ महसूस करें, तो एक छोटी सी दौड़ या गली में क्रिकेट खेलकर खुद को रिफ्रेश करें।

विश्वास मानिए, खेल आपकी जिंदगी को बहुत ज्यादा मजेदार और संतुलित बना सकते हैं ! पर याद रहे की आपको अपने शरीर को मैदान में ले जाना है, न की बस मोबाइल चलाया और शुरू हो गए उँगलियों से छक्के मारना । या फिर टेंपल रन करके अपने कैलोरीज जलाने की उम्मीद न करें । ऐसे में बस भगवान ही आपकी मदद कर सकते हैं ।

....

'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूं, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है'।

– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

मेरी नजर से भारतीय रेलवे

श्री विशाल बालासो माळी
उप निदेशक

नमस्ते एसिक परिवार!

मैं विशाल माळी हूँ। हाल ही में रेलवे सेवा के साढ़े पाँच वर्ष पूरे करने के बाद एसिक परिवार में शामिल हो गया हूँ। इस अवसर पर मैं हमारे देश के यात्री और वाणिज्यिक परिवहन की रीढ़ माने जाने वाले भारतीय रेलवे के साथ अपने पूर्व के अनुभव को आपसे साझा कर रहा हूँ और यह अवसर कार्यालय की हिंदी पत्रिका के माध्यम से बेहतर और क्या हो सकता है।

भारतीय रेलवे, जिसे प्यार से "भारत की जीवन रेखा" कहते हैं, दुनिया के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्कों में से एक है, लगभग 67,000 किलोमीटर से अधिक पटरियों पर फेली हुई है, जिससे रोज़ लाखों यात्रियों और वस्तुओं का कुशलतापूर्वक परिवहन होता है। अपने में एक शताब्दी से अधिक के समृद्ध इतिहास को समेटे यह भारत के सामाजिक आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में सहायक है। दूरदराज के गांव को हलचल भरे महानगरों से जोड़ने वाला इस नेटवर्क का विशाल विस्तार लोगों की सेवा के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

यह एक महत्वपूर्ण नियोक्ता भी है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों नौकरियां प्रदान करती है। विगत कुछ वर्षों में भारतीय रेलवे ने स्वंय को अद्यतन करने की दिशा में आधुनिकीकरण के प्रयास किए हैं, जिससे यात्रियों की सुविधाओं और सुरक्षा में अभूतपूर्व सुधार दिखता है। परंतु अपने उल्लेखनीय योगदान के बावजूद भारतीय रेलवे को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे–आधुनिकीकरण की निरंतर आवश्यकता, सुरक्षा–सुधार और परिवहन के अन्य साधनों से प्रतिस्पर्धा।

कार्गो परिवहन की दक्षता में सुधार, परागमन समय और लागत को कम करने के लिए समर्पित फ्रेट कॉरिडोर (डी.एफ.सी.) विकसित किए जा रहे हैं। मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन जैसी हाई स्पीड रेल परियोजनाएं लाकर भारतीय रेवले लंबी दूरी की यात्रा में क्रांतिकारी बदलाव लाने की तैयारी में है। इसके अतिरिक्त प्रौद्योगिकी और आधुनिकीकरण का समावेश यात्रियों को अनुभव और दक्षता को बढ़ाने का वादा करती है। ट्रेनों में ई – टिकटिंग, रियल– टाइम ट्रेन ट्रैकिंग और वाईफाई सेवाओं के कार्यान्वयन से पहले वाली भारतीय रेलवे के साथ हमारे अनुभव में सुखद बदलाव लाना शुरू कर दिया है। रेल यात्रा को अधिक आरामदायक और आनंददायक बनाने के लिए अमृत भारत स्टेशन योजना के माध्यम से देश भर में 1275 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, टर्न अराउंड समय को कम करने और माल परिवहन की सुरक्षा में सुधार के लिए देश भर में माल शेडों का आधुनिकीकरण प्रगति पर है।

भारतीय रेलवे के लिए सुरक्षा हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। उन्नत सिग्नलिंग प्रणालियों के कार्यान्वयन, स्वचालित ट्रेन सुरक्षा और बेहतर रखरखाव से दुर्घटनाओं में कमी लाने में योगदान दिया है। गतिमान एक्सप्रेस, तेजस एक्सप्रेस, वंदे भारत एक्सप्रेस, जैसी हाई– स्पीड ट्रेनों की शुरुआत आधुनिकीकरण के प्रति रेलवे की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। भारतीय रेलवे ने स्थिरता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। इसने 2030 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जक बनने का लक्ष्य रखा है। सौर ऊर्जा का उपयोग रेलवे पटरियों का विद्युतीकरण और ट्रेनों में जैव – शौचालय शुरू करने जैसी पहल हरित भविष्य के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

वंदे भारत!

भारत का कृषि क्षेत्र : एक दृष्टि

सुश्री रूपेश गुप्ता
उप निदेशक

कृषि और उससे जुड़े क्षेत्र इस देश के आधार हैं। आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र होने के नाते, जैविक खेती के तरीकों, प्राकृतिक और पुनर्योजी प्रथाओं सहित तकनीकी रूप से संचालित sustainable प्रथाओं को लाना आवश्यक है जो न केवल वर्तमान बल्कि भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों का भी ख्याल रखे।

खाद्य पर्याप्तता की दिशा में हमारे देश की यह यात्रा बिल्कुल भी सुखद नहीं रही है, आधुनिक प्रौद्योगिकियों और कृषि आदानों में सीमित या अपर्याप्त पहुंच, सूक्ष्म रसायन सहित मिट्टी की गुणवत्ता का अपूर्ण मूल्यांकन, खेत में कम इष्टतम गुणवत्ता और पोषण सामग्री, उपज, कृषि उत्पादन की बढ़ती लागत, के रूप में कांटे भी हिस्सा रहे है।

हालाँकि परिस्थिति उतनी निराशाजनक भी नहीं हैं, बीजों के क्षेत्र में आधुनिक विकास, अधिक किफायती कृषि अनुपूरक और कृषि विकास के विभिन्न चरणों में सरकारी समर्थन से किसानों को गुणवत्तापूर्ण उपज पैदा करने में मदद मिल रही है।

कृषि क्षेत्र के विकास में एक प्रमुख मील का पत्थर महान वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग और एम एस स्वामीनाथन द्वारा लाई गई हरित क्रांति रही है। नॉर्मन बोरलॉग को सही मायने में "हरित क्रांति का जनक" कहा जाता है और गेहूं की उच्च उपज वाली किस्मों (High Yield Verities) के विकास के क्षेत्र में अपने सराहनीय कार्य के लिए वर्ष 1970 के नोबेल शांति पुरस्कार के प्राप्तकर्ता थे। हरित क्रांति के परिणामस्वरूप 20वीं सदी के मध्य में विकासशील देशों में नई, अधिक उपज देने वाली किस्म के बीजों की शुरूआत के कारण खाद्यान्न (विशेष रूप से गेहूं और चावल) के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। 1967–68 से 1977–78 की अवधि में फैली हरित क्रांति ने भारत की स्थिति को भोजन की कमी से जूझ रहे देश से दुनिया के अग्रणी कृषि उत्पादक देशों में से एक में बदल दिया। दोहरी फसल हरित क्रांति की एक प्राथमिक विशेषता थी। प्रति वर्ष केवल एक के बजाय दो फसल मौसम रखने का निर्णय लिया गया। प्रति वर्ष एक मौसम की प्रथा इस तथ्य पर आधारित थी कि प्रतिवर्ष केवल एक ही वर्षा ऋतु होती है। दूसरे चरण के लिए पानी अब बड़ी सिंचाई परियोजनाओं से खेतों तक लाया गया। बाँध बनाये गये और सिंचाई की अन्य सरल तकनीकें भी अपनाई गईं। बेहतर आनुवंशिकी वाले बीजों का उपयोग हरित क्रांति का वैज्ञानिक पहलू था।

उच्च उपज विविधता कार्यक्रम (HYVP) केवल पाँच फसलों तक ही सीमित था: गेहूं, चावल, ज्वार, बाजरा और मक्का। इसके अलावा, हरित क्रांति

प्रौद्योगिकी में अंतर और अंतर–क्षेत्रीय स्तरों पर आर्थिक विकास में बढ़ती असमानताओं को जन्म दिया है। 10 हेक्टेयर से अधिक भूमि वाले बड़े किसान इस क्रांति से विशेष रूप से लाभान्वित हुए, क्योंकि उन्होंने विभिन्न आदानों जैसे कि HYV बीज, उर्वरक, मशीनें आदि में बड़ी मात्रा में धन निवेश किया। परंतु, मध्य एवं लघु वर्गीय किसान आधुनिक तकनीक तथा उच्च उपज वाली किस्मों को afford नहीं कर पाये और कर्ज के विषम चक्र मे धस गए। इसने पूंजीवादी खेती को भी बढ़ावा दिया। सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र उत्तर में पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश और दक्षिण में आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु रहे। इसने असम, बिहार, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा सहित पूर्वी क्षेत्र और पश्चिमी और दक्षिणी भारत के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों को मुश्किल से ही छुआ है। हरित क्रांति ने केवल उन्हीं क्षेत्रों को प्रभावित किया जो कृषि की दृष्टि से पहले से ही बेहतर स्थिति में थे। इस प्रकार हरित क्रांति के परिणामस्वरूप क्षेत्रीय असमानताओं की समस्या और अधिक बढ़ गई है। हरित क्रांति के दौरान शुरू की गई फसलें जल–गहन फसलें थीं। नहर प्रणालियाँ शुरू की गईं, और सिंचाई पंपों ने भी गन्ने और चावल जैसी जल–गहन फसलों की आपूर्ति के लिए भूजल को सोख लिया, जिससे भूजल स्तर कम हो गया।

कुल मिलाकर, हरित क्रांति कई विकासशील देशों, विशेषकर भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी और इससे उन्हें राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में अभूतपूर्व स्तर मिला। यह कृषि में उसी वैज्ञानिक क्रांति के सफल अनुकूलन और हस्तांतरण का प्रतिनिधित्व करता है जिसे औद्योगिक देशों ने पहले ही अपने लिए विनियोजित कर लिया था। हालाँकि, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के अलावा पर्यावरण, गरीब किसानों और ऐसे रसायनों के बारे में उनकी शिक्षा जैसे कारकों पर कम ध्यान दिया गया जिसमे सुधार की आवश्यकता अत्यंत जरूरी है। आगे बढ़ने के सफर में, नीति निर्माताओं को गरीबों को अधिक सटीक रूप से लक्षित करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उन्हें नई प्रौद्योगिकियों से अधिक प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो और उन प्रौद्योगिकियों को पर्यावरण की दृष्टि से अधिक टिकाऊ बनाने की भी आवश्यकता है।

एम एस स्वामीनाथन ने उचित ही कहा है "If agriculture goes wrong, nothing else will have a chance to go right-" यानि अगर खेती गलत हो गई तो किसी और चीज को सही होने का मौका नहीं मिलेगा।

'हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है'।

– महात्मा गांधी

शिक्षा भी संस्कार भी

श्री कामेश्वर दुबे
सहायक निदेशक

हम जिस पर्यावरण में रहते हैं, जिस वातावरण से आते हैं; उसमें संगत का प्रभाव पड़ता ही है। ऐसा देखा गया है, कि भले ही बच्चे जुड़वाँ हों, फिर भी उनके स्वभाव में बहुत परिवर्तन हो जाता है क्योंकि संगत में अलग–अलग प्रकार का प्रभाव होता है। इसी संकल्पना में यह कहानी प्रासंगिक होगी।

एक राजा थे जिन्हें अपने तोते से विशेष लगाव था। दुर्भाग्यवश उनका तोता मर गया। तत्पश्चात् पिंजरा खाली पड़ा हुआ था। दरबार में राजा ने अपने मंत्रियों से कहा –'हे मंत्रीगण, पिंजरा खाली पड़ा हुआ है, एक तोते की व्यवस्था की जाए।' नए तोते की खोज में मंत्री इधर–उधर घूमते रहे। ढूँढ़ते–ढूँढ़ते एक संत के यहाँ पहुँचे और उनको एक बहुत सुंदर तोता दिखाई दिया। उन्होंने संत से निवेदन किया कि हे प्रभु! हमारे राजा तोता खोज रहे हैं। परंतु वह हमें कहीं भी नहीं मिल रहा है, आपका तोता बहुत सुंदर है। आप अगर हमें अपना तोता दे देंगे तो राज दरबार में लेकर जाएँगे। संत तो होते ही हैं उदार, अतः वे बोले, 'ले जाओ'। संत के तोते को लेकर मंत्री राजा के दरबार में उपस्थित हुए जिसे देखकर राजा के घर वाले अत्यंत प्रसन्न हुए और सोने के पिंजरे में तोते को रख दिया और उसका लालन–पालन सब घरवाले मिलकर करने लगे। शाम हुई, सब सो गए।

फिर जब प्रातःकाल के ब्रह्ममुहूर्त में तोता बोलने लगा, "जय श्री राम, हरि ओम तत्सत्, हे राजा! हे महारानी! उठिए। ब्रह्ममुहूर्त हो गया है, उठने का समय हो गया है, यह सोने का समय नहीं है।" प्रायः तोता रामायण और महाभारत के पाठ पढ़ता रहता था, जिसे सुनकर राजा एवं राजपरिवार के सदस्य बड़े प्रसन्न होते थे। राजा की यही दिनचर्या बन गई थी।

राजमहल में सभी लोग ब्रह्ममुहूर्त में उठ जाते थे, और तोते की वाणी सुनने की प्रतीक्षा करते रहते थे। जैसे ही तोता बोलना प्रारंभ करता था, सब को बड़ी प्रसन्नता होती थी। दरबार में राजा बोला करते थे ''यह तोता क्या मिल गया, मुझे तो जैसे संत मिल गए हों। राजमहल का वातावरण इस तोते ने बदल कर रख दिया है।

काल की अपनी गति होती है और हम सब काल की गति में बंधे हुए हैं। बचपन, यौवन, बुढ़ापा और तत्पश्चात् इस पृथ्वी को छोड़कर जाने का चक्र है। यह सब के लिए चलता ही रहता है और इससे तोता भी अछूता नहीं था, एक दिन वह भी आता है जब तोते की मृत्यु जाती है। राजपरिवार में तो जैसे मातम छा गया हो। पूरा राजपरिवार शोकाकुल हो

जाता है और राज्य में दो सप्ताह का शोक घोषित कर दिया जाता है।

राजकाज पुनः धीरे–धीरे पटरी पर लौटता है परंतु कुछ दिनों के बाद से राजा अपने मंत्रियों से पुनः कहते हैं कि–"हे मंत्रीगण! तोते की कमी बड़ी खल रही है, इसीलिए दूसरे तोते का प्रबंध किया जाए।" मंत्रीगण हूबहू पहले वाले तोते की तरह ही दूसरा तोता ढूंढ़ लेते हैं। एक कसाई ने उस तोते को पाल रखा था। उन्होंने निवेदन किया कि महाराज को एक तोता चाहिए अगर आपकी आज्ञा हो तो हम इसे ले जाएँ? कसाई बोला– "अगर हम नहीं भी देंगे तो आप राजा के मंत्री हैं उसे लेकर ही जाएँगे।" मंत्री बोले– नहीं–नहीं, हमारा निवेदन है आपसे, हमें यह तोता दे दीजिए"।

कसाई ने उनको बोला –"तोता देने से पहले मैं आपको बता दूँ कि एक बहेलिया ने एक पेड़ से दो तोते उतारे थे, एक तोता एक संत लेकर चले गए और दूसरा तोता उसने मुझे बेच दिया था। यह दूसरा तोता मेरे पास है, आप ले जाएं।" और तोता ले जाने के बाद अब कसाई वाला तोता राजा के पिंजरे में पहुँच गया। राजपरिवार प्रसन्न हुआ, सबको लगा कि वही तोता पुनर्जीवित होकर चला आया हो। दोनों के नयन, नासिका, पंख, आकार और चितवन सब एक जैसे थे। लेकिन सुबह–शाम तोता इस प्रकार राजा को बुलाने लगा जैसे कोई कसाई अपने नौकरों को उठाता हो। तोता बोल पड़ा, "ऐ राजा के बच्चे राजा बन बैठा है? मेरे लिए ला अंडे, नहीं तो पड़ेंगे डंडे।" और यही बात तोता बार–बार दोहराता रहा। राजा को क्रोध आ गया। राजा क्रोध से जलने लगा। तोते को पिंजरे से निकाला गया और तुरंत मृत्युदण्ड की सजा दे दी गई। बाद में पता चला कि दोनो तोते सगे भाई थे। एक को मृत्युदण्ड की सजा तो दूसरे को ह्रदय से सम्मानित किया गया, झण्डे झुकाए गए, भंडारा किया गया, शोक मनाया गया और राजा सोचने पर विवश हो गए कि नियति का यह खेल क्यों है, आखिर भूल कहाँ हो गई है?

भूल हुई थी, और यह भूल थी दोनों तोतों की संगति का, इसलिए हे प्रबुद्ध समाज के कर्ता–धर्ता! अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी दीजिए, ताकि वे जहाँ भी जाएं सबका सम्मान करें, और अपने अच्छे आचरणों से अपने साथ–साथ अपने परिवार का नाम भी रौशन करें।

साहब–मैं जिन्दा हूं

श्री संकल्प नंदा

सहायक निदेशक

अतीत का वह क्षण स्मृति में इस तरह अंकित है, जैसे आज ही की घटना हो। जनवरी माह अक्सर ही शाखा कार्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़ में व्यस्ततम माह में से एक हुआ करता था। प्रतिदिन नियमित कार्य की आपाधापी के अलावा जीवित प्रमाणपत्र जमा करने वालों का हुजूम भी उमड़ा रहता था। साथ ही जब भी कोई प्रमाणपत्र जमा करवाने आता, अपने साथ कार्यालयीन सैर–सपाटे के लिए दो–तीन अन्य व्यक्तियों को साथ लाता जिससे कि कार्यालय शादी का घर जैसा प्रतीत होता।

और हम थे वहाँ के 'साहब'! हाँ इसी नाम से वहाँ आने वाले हमें सम्बोधित किया करते थे। यह शब्द भी बड़ा कमाल का है जनाब। पल भर में कई खाकसारों को फर्श से अर्श तक पहुँचा देता है।

आज भी हम समयानुसार घर से विदा हुए, और ठीक 09:15 पूर्वाह्न कार्यालय के पास अपनी चार पहिया वाहन खड़ा कर 37 सीढ़ियाँ फलाँगते दूसरे माले में स्थित शाखा कार्यालय के मुख्य द्वार के सामने थे। हमारा स्वागत मुख्य द्वार में बिखरे दरजनों की संख्या में जूते–चप्पलों के ढ़ेर ने किया । अन्दर बैठे आगन्तुकों के शोर–शराबे ने वातावरण में पहले से ही खिन्नता का भाव उत्पन्न कर रखा था। अचानक कुछ एक की दृष्टि हम पर इनायत हुई और नदी में उत्पन्न जल तरंग की भाँति सभी हमें देख तपाक से खड़े हुए और अभिवादन करने लगे। शायद हमारे पहनावे, सुलझे हुए बाल, कद–काठी और हाथ में धारण की गई अटैची से उन्हें बोध हो गया था कि 'साहब' हम ही हैं।

हम उन सभी के सामने से चलते हुए केबिन की ओर ऐसे अग्रसर हुए जैसे युद्ध जीतने के बाद राजा अपने राज्य में आगमन उपरान्त चलता हो। हाँ, सही समझा आपने, हमने शाखा कार्यालय को राज्य और अपने को राजा ही समझ रखा था। सिंहासन ग्रहण करने उपरान्त हमने घंटी बजाई और 'जहान' नामक चपरासी को बुलाया। कितनी बार कहा है कि मुख्य द्वार में पड़ीं चप्पलें सलीके से रखी जानी चाहिए–हमने खीजते हुए कहा।

गलती हो गई साहब, अभी ठीक किए देता हूँ –कहते ही जहान वहाँ से चला गया।

बिलासपुर में यह रिवाज शायद पूर्ववत से चला आ रहा था कि कोई भी बीमित व्यक्ति या आगन्तुक अपने जूते–चप्पल लेकर शाखा कार्यालय में प्रवेश नहीं करता था। कई बार इसके कारण तलाशने की कोशिश की गई अंततः यह पता चला कि यहाँ आने वाले लोग इस कार्यालय को मन्दिर की भाँति पूजते थे, क्योंकि यहीं से उनको अनेक हितलाभ पेंशन आदि जैसी सुविधाएँ मिलती थीं। जैसे कि मन्दिर में प्रभु से माँगी हुई इच्छाएं पूर्ण हों।

हमने फिर घंटी बजाई, इस बार नम्बर 'विजय' नामक कार्मिक का था। एक–एक करके आश्रितों को अन्दर भेजो– हमने रुबाब भरे स्वर से गरजना की।

अत्यधिक भीड़ सर्द मौसम में भी ग्रीष्म ऋतु जैसे उमस और कुछ फितरतन गुस्सैल होने की आदत, जिसे अच्छी एवं सभ्य शब्दावली में **Short Tempered** कहते हैं। आज हमारा मिजाज सातवें आसमान पर

था। हम कुछ क्षण अंगडाई लेने लगे तभी एक दबी–दबी सी आवाज़ हमारे कानों में आई– "नमस्ते साहब!"

हमने देखा एक दुबली–पतली, साँवली औरत और लाठी पकड़े एक बुजुर्ग–दोनों हाथ जोड़े दरवाज़े के मुहाने पर खड़े हैं।

"अन्दर आयें साहब?" उस औरत ने हल्के स्वर में कहा।

हमने अभिवादन स्वीकार कर उन्हें बैठने को कहा।

बैठते ही बुजुर्ग ने जीवित प्रमाणपत्र आगे बढ़ाते हुए कहा–साहब! जिस व्यक्ति का यह प्रमाण पत्र है वह नीचे है।

नीचे है से मतलब?–हमने गुस्से में कहा। हम तुम्हारे नौकर नहीं जो उसे देखने नीचे जाएँगे। तुम दोनों क्यों नहीं उसे ऊपर लेके आते?–हमने दबकाते हुए कहा।

साहब! वह नीचे एम्बुलेंस में है–कहते ही उस औरत के आँखों से आँसू छलक पड़े।

बात को सम्भालते हुए हमने कहा– "अच्छा ठीक है, हम चलते हैं नीचे" – कहकर हम उठे और उन दोनों के साथ चप्पलों के ढ़ेर के बीच से होते, ठीक सीढ़ियां फलाँग नीचे उतरे। साथ में था चपरासी जहान जो कागज एवं कलम पकड़े हुए था और विजय जो हमें अनुरक्षण कर रहा था। जिससे हमारे राजा होने की परिकल्पना को पोषण प्राप्त हो रहा था।

नीचे पहुँचते ही हमने झीकते हुए कहा–"कहाँ है एम्बुलेंस?"

साहब! बुजुर्ग ने कहा–सँकरी गली होने के कारण गाड़ी को बाहर खड़ी करवाया है।

क्या नौटंकी है– चिड़चिड़ाते स्वर में हमने कहा और अनमने भाव से उन लोगों के साथ गली छोड़ मुख्य मार्ग की ओर पहुँच गए।

साहब! वह रही एम्बुलेंस–औरत ने तपाक से अपना दाहिना हाथ उठाते हुए एम्बुलेंस की तरफ इशारा किया।

गुस्से से लाल, हमने उनकी ओर देखते हुए कहा– "अब चलो भी, हमें भी काम है, सारा दिन इसी में निकाल देंगे तो बाकी बैठे लोग गरीयाएंगे हमें।"

सकुचे मन एवं कुछ बुदबुदाते हुए हम एम्बुलेंस के पास पहुँचे।

एम्बुलेंस के ड्राईवर ने ज्यों ही हमें एवं हमारे साथ झुके दोनों कार्मिकों को देखा तब वह समझ गया कि हम ही साहब हैं।

हमारा अभिनन्दन कर वह झट से एम्बुलेंस के पीछे की ओर लपका और उसका दरवाज़ा खोला।

दरवाज़ा खुलते ही हमारी दृष्टि के समक्ष हृदय विदारक दृश्य था। एक अस्थीपंजरनुमा, साँवला क्या कहें काला–सा व्यक्ति स्ट्रेचर पर लेटे हुए था। उसके दोनों हाथ–पैर अपनी जगह से नदारद थे। शरीर सूख के काँटा हुआ पड़ा था। जगह–जगह फफोले हुए पड़े थे और सारे एम्बुलेंस से एक दुर्गन्ध–सी आ रही थी। शायद दरवाज़े खुलने की आवाज से वह नींद से जागा हुआ प्रतीत होता था। लेटे ही लेटे उसने कहा–"साहब, हम जिंदा हैं।"

यह वाक्य सुन मस्तिष्क सन्न सा रह गया। लगा मानो वज्रपात हो गया हो।

मेरी आँखों से स्वतः ही अश्रु फूट पड़े, दोनों हाथ आपस में नमस्ते की मुद्रा में जुड़ गए। मैंने अपना शीश उस व्यक्ति, बुजुर्ग और महिला के समक्ष नतमस्तक किया, एम्बुलेंस लाने को अपनी इच्छानुसार पैसे दिए। महिला और बुजुर्ग को भी कुछ पैसे दिए। जिसे पहले लेने से तो उन्होंने मना किया परंतु बहुत आग्रह उपरान्त उन्होंने लिए। साथ ही मैंने यह वचन दिया कि अब से आप लोग नहीं मैं आऊँगा आपके घर जीवित प्रमाणपत्र लेने।

साहब–तिरोहित हो चुके थे।

"राजा" का अहंकार चकनाचूर हो चुका था, और "हम" में छुपा अहम का भाव भी विसर्जित था। अचानक ही एक ठण्डी हवा के झोंके ने एम्बुलेंस से आती दुर्गंध को महक में बदल दिया।

सही मायने में आज मेरा पुर्नजन्म हुआ था और असल मायने में अहसास हुआ कि मैं एक शासकीय सेवक हूँ–सेवक। जाते–जाते मैंने स्ट्रेचर पर लेटे उस युवक के पैर छुए और कहा– "मुझे माफ करना।"

सभी सन्न थे–साहब अब बदल चुके थे।

जय हिन्द!

योग

श्री जयशंकर तिवारी
सहायक निदेशक

योग एक प्राचीन भारतीय अनुशासन है जिसका उद्देश्य शरीर, मन और आत्मा के समग्र कल्याण को प्रोत्साहित करना। इस अनुशासन में विभिन्न आसन (शारीरिक मुद्राएँ), प्राणायाम (श्वास तकनीकें), ध्यान और उपनिषदों के दार्शनिक सिद्धांत शामिल हैं। योग का मूल उद्देश्य व्यक्ति में स्व–जागरूकता और आत्म–अनुभव को बढ़ाना है। इसके माध्यम से, अभ्यासी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य और संतुलन प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक स्तर पर योग लचीलापन, मांसपेशियों की ताकत और कुशल समन्वय बढ़ाता है। यह शारीरिक समस्याओं जैसे दर्द, जोड़ों की समस्याओं और चोटों को कम करने में भी मदद करता है।

मानसिक और भावनात्मक स्तर पर, योग तनाव और चिंता को कम करता है, ध्यान और संकेंद्रण को बढ़ाता है, और आंतरिक शांति की भावना को विकसित करता है। यह व्यक्ति की भावनात्मक क्षमता और भावनात्मक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। आध्यात्मिक स्तर पर, योग व्यक्ति के अंदर की खोज को प्रोत्साहित करता है। यह व्यक्ति को अपने सच्चे स्वरूप और जीवन के उद्देश्य को समझने में मदद करता है। इससे व्यक्ति में आध्यात्मिक जागरूकता और आत्म–पहचान का विकास होता है। समग्र रूप से, योग एक समग्र अनुशासन है जो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ाने के लिए एक आधार प्रदान करता है। इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति में संतुलन, समृद्धि और जीवन का उद्देश्य प्राप्त होता है।

हिन्दी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है। उसे हम सबको अपनाना है।
– लालबहादुर शास्त्री

मेरी नजर में मरोल कार्यालय : सुरक्षा व आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित एक निगम कार्यालय

श्री मनोज कुमार शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक

परिचय

क.रा.बी.निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल, मुंबई के हृदय में स्थित, क.रा.बी.निगम कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए एक सुविधाजनक और सुरक्षित कार्यस्थल है। यहाँ की प्रमुख विशेषताओं में से एक सुरक्षा काउंटर है, जो मुख्य प्रवेश द्वार पर सी.सी.टी.वी. कैमरे से सुसज्जित है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी परिसर पूरी तरह से सी.सी.टी.वी. निगरानी में हैं, जिससे एक सुरक्षित माहौल प्रदान होता है।

पूर्णतः वातानुकूलित कार्यालय

मरोल परिसर के सभी तल पूरी तरह से वातानुकूलित हैं, जो गर्मी और उमस भरे मौसम में एक आरामदायक वातावरण बनाता है ताकि आगंतुक बीमाकृत व्यक्ति एवं कार्यालय के कार्मिक हर मौसम में अपना शत–प्रतिशत योगदान दे सकें।

कैफेटेरिया एवं कार्मिक–कैंटीन

कर्मचारियों के लिए उत्कृष्ट कैफेटेरिया एवं कार्मिक–कैंटीन भी उपलब्ध है, जहाँ भारतीय और महाराष्ट्रीयन व्यंजनों का स्वादिष्ट भोजन प्रदान किया जाता है। इसके अलावा, एक कैफेटेरिया भी है जो सुबह 7 बजे से रात 10 बजे तक सभी अधिकारियों और पर्यटकों के लिए खुला रहता है।

सम्मेलन कक्ष और बहुउद्देशीय कक्ष

दूसरी मंजिल पर एक सम्मेलन कक्ष है, जिसमें 50 सदस्यों की क्षमता है। यह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और बैठकों के लिए पूर्ण सुविधाओं के साथ आता है, जिसमें प्रोजेक्टर की व्यवस्था भी है। चौथी मंजिल पर एक बहुद्देशीय कक्ष है, जिसे विभिन्न कार्यक्रमों और आयोजनों के लिए डिज़ाइन किया गया है।

आवासीय सुविधाएं

मरोल में 06 विश्राम गृह और 12 अतिथि गृह है, जो भारत के विभिन्न हिस्सों से आने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए बने हैं। यह आरामदायक ठहराव सुनिश्चित करता है, जिससे आगंतुक अपनी यात्रा के दौरान आराम महसूस कर सकें।

मनोरंजन कक्ष

मरोल कार्यालय में कर्मचारियों और अधिकारियों के मनोरंजन के लिए एक अत्याधुनिक मनोरंजन कक्ष भी उपलब्ध है। यह क्लब कर्मचारियों के लिए एक आदर्श स्थान है जहाँ वे अपने कार्य के तनाव से मुक्त होकर खेल के माध्यम से पुनः तरोताजा हो जाते हैं ताकि कार्य कुशलता में वृद्धि हो। क्लब में टेबल टेनिस, कैरम, शतरंज, बैडमिंटन, वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताएं, पिकनिक जैसी गतिविधियाँ और अन्य मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य कर्मचारियों के बीच सामंजस्य और सहयोग को बढ़ावा देना है, साथ ही उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बनाए रखना है।

बागवानी और सुरक्षा

इस परिसर में एक सुंदर बॉटनिकल गार्डन है, जहाँ विभिन्न प्रकार की औषधीय और खाद्य पौधों जैसे कि इंसुलिन, तेजपत्ता, एलोवेरा, और करी पत्ता आदि का संग्रह है। 24 X 7 सुरक्षा सुविधाएँ और सी.सी.टी.वी. कैमरे इस स्थान की सुरक्षा को सुनिश्चित करते हैं।

मरोल कार्यालय का मुंबई मेट्रो नई एक्वा-लाइन से कनेक्टिविटी

क.रा.बी.निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल अंधेरी(पूर्व), मुंबई में स्थित एक महत्वपूर्ण कार्यालय है, जो मुंबई यातायात की अपनी बेहतरीन कनेक्टिविटी के लिए भी जाना जाता है। हाल ही में 2024 में ही इस कार्यालय को मुंबई मेट्रो की नई एक्वा लाइन के माध्यम से शानदार तरीके से जोड़ा गया है, जो इसे एक अद्वितीय और सुविधाजनक कार्यस्थल बनाता है। यह कार्यालय मेट्रो नेटवर्क से सीधे जुड़ा हुआ है, और मरोल कार्यालय के परिसर के अंदर मेट्रो स्टेशन स्थित है।

यह मेट्रो लिंक आरे कॉलनी जे.व्ही.एल.आर. से लेकर मुंबई के लगभग सभी महत्वपूर्ण स्टेशनों से होकर कोलाबा तक फैला हुआ है, जो मेट्रो यात्रा के माध्यम से कर्मचारियों, अधिकारियों और आगंतुकों के लिए एक तेज़ और आरामदायक यात्रा की सुविधा प्रदान करता है। यह कनेक्टिविटी खासतौर पर अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए बहुत लाभकारी है, क्योंकि वे समय की बचत करते हुए आसानी से अपने गंतव्य तक पहुंच सकते हैं।

इस प्रकार की मेट्रो कनेक्टिविटी वाला मुंबई में उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल एकमात्र कार्यालय है जो इस विशेष सुविधा से जुड़ा हुआ है, जो इसके कर्मचारियों और आगंतुकों के लिए एक प्रमुख लाभ है।

अतः अंत में मैं यह कहना चाहता हूँ कि क.रा.बी.निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, मरोल न केवल एक शानदार कार्यस्थल है, बल्कि यह एक अद्‌भुत अतिथि कक्षों से सुज्जित स्थान भी है। यहाँ का सुंदर बाग, बेहतरीन सुविधाएँ, सुरक्षा व्यवस्थाएँ एवं मेट्रो से मुंबई से सभी महत्वपूर्ण स्थानों से जुड़ाव इसे मुंबई में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाती है। यह स्थान वास्तव में आलीशान कार्यस्थल और सुंदर कार्यालय का प्रतीक है।

परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो अपने में अपनी भाषा में उन्नति करो।

- भारतेंदु हरिश्चन्द्र

भारत को डिजिटल बनाने में हिंदी टाइपिंग की भूमिका

श्री वरुण कुमार गोड़
व.श्रे.लि

डिजिटल भारत का लक्ष्य देश के हर नागरिक को डिजिटल सेवाओं और तकनीकों से जोड़ना है। इस अभियान में हिंदी टाइपिंग का विशेष महत्त्व है क्योंकि हिंदी भारत की न केवल सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है बल्कि विश्व की प्रमुख भाषा है। यूनिकोड हिंदी में टाइपिंग की सुविधा होने से क्रांति आई है अर्थात् हिंदी की सामग्री को कहीं भी आसानी से पढ़ा जा सकता है भले ही उस उपकरण यानी कंप्यूटर या मोबाइल में हिंदी का फॉण्ट हो या न हो। इसी दिशा में मैं यहाँ कुछ प्रमुख पहलुओं पर चर्चा कर रहा हूँ :–

1. **ई–गवर्नेंस :** सरकारी सेवाओं को डिजिटल माध्यम से आम जनता तक पहुंचाना, जैसे कि आधार, पासपोर्ट, पैन कार्ड, आदि। हिंदी टाइपिंग की सुविधा से अधिक लोगों को ये सेवाएँ उनके स्थानीय भाषा में उपलब्ध होती हैं।

2. **शिक्षा :** ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफार्मों पर हिंदी में टाइपिंग करने की सुविधा से हिंदी भाषी छात्रों को पढ़ाई में सहूलियत होती है। इसके माध्यम से वे आसानी से अपनी पढ़ाई संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और ऑनलाइन परीक्षा दे सकते हैं।

3. **संचार :** सोशल मीडिया, ईमेल, और मैसेजिंग ऐप्स में हिंदी टाइपिंग की सुविधा से लोग आसानी से अपनी बात साझा कर सकते हैं। इससे स्थानीय भाषाओं में संवाद बढ़ता है और लोगों के बीच संवाद की बाधाएँ कम होती हैं।

4. **व्यवसाय :** हिंदी में डिजिटल मार्केटिंग, वेबसाइट्स, और ऑनलाइन शॉप्स के माध्यम से स्थानीय व्यवसायों को बढ़ावा मिलता है। इससे व्यवसायी अपने ग्राहकों से उनकी भाषा में संवाद कर सकते हैं।

5. **सामाजिक समावेशन :** डिजिटल प्लेटफार्म पर हिंदी भाषा की उपलब्धता से समाज के सभी वर्गों को डिजिटल सुविधाओं का लाभ मिलता है। इससे डिजिटल डिवाइड कम होता है और समाज के अधिकतर लोग मुख्य धारा में शामिल हो पाते हैं।

टूल्स और सॉफ्टवेयर :

इंडिक इनपुट : गूगल का यह टूल हिंदी में टाइपिंग के लिए बेहद लोकप्रिय है। इसमें फोनेटिक टाइपिंग की सुविधा है, जिससे अंग्रेजी में टाइप करने पर हिंदी शब्द उत्पन्न होते हैं। यह मोबाइल एवं कंप्यूटर दोनो में सक्रिय है।

गूगल ट्रांसलेशन : यह टूल भी हिंदी में टाइपिंग के लिए उपयोगी है और कई लोग इसका प्रयोग करते हैं।

डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत हिंदी टाइपिंग की सुविधा को प्रोत्साहित करने से डिजिटल साक्षरता बढ़ेगी और लोग अधिक सुगमता से डिजिटल सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे।

इक्कीसवीं सदी और महिला सशक्तिकरण

श्री दीपक यादव
सहायक

"किसी देश का विकास किस गति से होगा इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उसे देश की महिलाओं की क्या स्थिति है।"

–कार्ल मार्क्स

महान जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स की उपरोक्त पंक्तियाँ अपने आप में महिला सशक्तिकरण की वकालत करती हैं। जहाँ सबसे पहले बात यह आती है कि सशक्तिकरण क्या है? तो विश्व बैंक के अनुसार– 'विकल्पों का सृजन और उन विकल्पों से संबंधित कार्यों एवं परिणामों को प्राप्त करने में व्यक्तियों एवं समूहों की क्षमता में वृद्धि की प्रक्रिया को ही सशक्तिकरण कहा जाता है।" अब बात आती है महिला सशक्तिकरण की तो –महिला सशक्तिकरण का अर्थ है कि महिलाओं को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और बौद्धिक स्तर पर अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने का अधिकार दिया जाना। साथ ही, महिलाओं को समान नागरिक समझना भी महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक घटक है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार महिला सशक्तिकरण के पांच घटक हैं –

1) महिलाओं में आत्म महत्त्व की भावना।
2) अपने विकल्पों को निर्धारित करने एवं उन्हें रखने का अधिकार।
3) समान अवसरों एवं संसाधनों तक पहुँच का अधिकार।
4) घर के भीतर एवं बाहर अपने जीवन को नियंत्रित करने संबंधी निर्णय का अधिकार।
5) राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं में महिलाओं की भूमिका और निर्णय का अधिकार।

आज 21वीं सदी के दौर में महिलाएँ अर्थव्यवस्था से लेकर राजनीति और प्रौद्योगिकी से लेकर रक्षा एवं

चिकित्सा सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी से परचम लहरा रही हैं। महिलाएँ पूरे विश्व में किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी की सी.ई.ओ. किसी राष्ट्र की राष्ट्रीय अध्यक्ष खेलों के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में (और शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराई हो) अपनी उपस्थिति से वे यह साबित कर रही हैं कि उन्हें किसी भी क्षेत्र में दोयम दर्जे का नागरिक ना समझा जाए।

यह सर्वविदित है कि महिला जनसंख्या पुरुषों की जनसंख्या के आसपास ही है, अर्थात दुनिया की लगभग आधी जनसंख्या महिलाओं की है। परंतु तमाम ऐसे पक्ष हैं जहाँ महिलाओं की स्थिति उनकी जनसंख्या और क्षमता से मेल नहीं खाती। इस संबंध में महिला सशक्तिकरण के निम्न आयाम है –

1) आर्थिक सशक्तिकरण

2) सामाजिक एवं सांस्कृतिक सशक्तिकरण

3) राजनीतिक सशक्तिकरण

दुनिया में महिला कार्य बल की बात करें तो पुरुषों के मुकाबले उनकी हिस्सेदारी कम है, जबकि यही यदि हम भारत के परिपेक्ष में देखें तो स्थिति चिंताजनक है क्योंकि 2004 और 2005 में यह 42.5% की तुलना में वर्तमान में यह 32.7% है।

अर्थात कार्य बल में महिलाओं की संख्या घटी है महिलाओं की कार्यबल में कमी का हवाला देते हुए आई.एम.एफ. की रिपोर्ट कहती है कि यदि भारत में कार्य बल सामान्य हो जाए तो इससे भारत की जी.डी.पी. में 26 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। महिलाओं को आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी इस कारण नहीं मिल पाती कि उनकी देखभाल एवं कौशल क्षमता पर ठीक प्रकार से ध्यान नहीं दिया जाता है। इस रिपोर्ट के मुताबिक जहाँ महिलाएँ कामकाजी है अर्थात जहाँ वह आर्थिक उपादान करती है। वहाँ उसका योगदान निर्णय लेने से भी होता है।

पुरुषवादी मानसिकता और तमाम अन्य रूकावटों के कारण महिलाओं को काम पर जाने नहीं दिया जाता है। जहाँ महिलाएँ काम पर भी हैं तो पिंक कॉलर वाली नौकरियों में इनकी संख्या दिखती है परंतु इसमें ना तो इनको पर्याप्त सुरक्षा है और ना ही वेतन। फॉर्च्यून 500 पत्रिका में केवल 38 महिलाएँ और उसमें सिर्फ तीन अश्वेत महिलाओं का होना कतई गर्व करने जैसा नहीं हो सकता है।

अब यदि सामाजिक सशक्तिकरण की बात करें तो दुनिया की लगभग सभी सभ्यताओं में महिलाओं को सामाजिक वंचना का शिकार होना पड़ता है। यदि भारत में ले तो यहाँ पर महिला को देवी कहा जाता है परंतु उसे मंदिर में प्रवेश करने पर प्रतिबंध किया जाना भी सामने आता है। हमारे पड़ोसी पाकिस्तान में एक पुरुष के गवाही के बराबर दो महिलाओं की गवाही मानी जाती है, इसी समाज में महिलाओं को अनेक दंश झेलने पड़ते हैं। एक सरकारी रिपोर्ट के तहत भारत की हर 20वीं महिला अपने जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर आत्महत्या के बारे में सोचती है।

समाज में महिलाओं के विरुद्ध सर्वाधिक क्रूर हथियार बलात्कार है। यही नहीं महिलाएं खुद पुरुषवादी समाज में रहकर अपनी सोच वैसी बना लेती हैं। उदाहरण के रूप में किसी सास द्वारा अपने पुत्रवधू को प्रताड़ित करना। आज जब दुनिया चांद और अन्य ग्रह पर जाने और वहाँ अध्ययन करने की मिसालें कायम करते हुए अपना कदम बढ़ा रही हैं। इस प्रक्रिया में हमारी सरकारों ने उनकी स्थितियों को सुधारने हेतु लगातार कार्य किया है। सरकार ने अनेक योजनाएं जैसे जन–धन योजना, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, जीवन–ज्योति योजना, किरण योजना, गति एवं क्युटी योजना आदि के माध्यम से सरकार लगातार स्त्री उत्थान और उनका उचित स्थान प्रदान करने हेतु प्रयासरत है। यहाँ यह बात समझने योग्य है कि सरकारों का कानून तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु तो ठीक है, परंतु समाज में वास्तविक बदलाव तब आएगा, जब समाज स्वयं इसमें बदलाव करेगा। प्रसिद्ध समाजशास्त्री आंद्रे बैटल के अनुसार सरकार वह कानून बनाती है जो महिलाओं की सुरक्षा के लिए आवश्यक होती है, परंतु वास्तविक बदलाव उसकी संस्कृति के बदलावों से ही हो सकता है। अंत मे दुष्यंत कुमार के शब्दों में –

"हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

घर की लक्ष्मी

श्री अमित कुमार
सहायक

दोस्तों, हमारे घर में लक्ष्मी आती है
एक औरत के अलग अलग रूपों में,
कभी बेटी, कभी पत्नी, कभी बहू बनकर
जिधर भी वो आती है,
अपने जादू से घर में खुशियां भर देती है
उसके बचपन की नन्ही-सी अदाएं,
प्यारा-सा चेहरा देखकर हम रोमांचित हो जाते हैं।
एक पिता की जान होती है
जो कन्यादान में
हमेशा के लिए पति को सौंप दी जाती है।
देखा जाये तो इनके जैसा कोई नहीं,
पर लगता है कि आज की इस दुनिया में
अलग ही नज़ारा देखने को मिल रहा है।
अलग अलग तरीकों से
मारपीट, बलात्कार, हत्या
इनसे बेटी रूपी लक्ष्मी के अस्तित्व
को ही ठुकराया जा रहा है।
लोभ, ईर्ष्या एवं घृणा के चलते,
न जाने क्यों इनको घाव दिया जा रहा है।
फूल जैसे खिलने के बजाय,
कांटों भरा जीवन बनाया,
क्या हम लोग इतने लाचार है
क्यूँ?
आज की इंसानियत धीरे धीरे कम हो रही है।
मुझे तो पता नहीं कि
ऊपर बैठे उस माता लक्ष्मी को क्या लगता होगा।
आप सभी से मैं ये निवेदन करता हूं कि
उस घर की लक्ष्मी के लिए आप लोग ऐसा कुछ करें
जिससे उसपर ऐसी कोई नौबत ना आये

अयोध्या

श्री अरूण कुमार
अवर श्रेणी लिपिक

अयोध्या उत्तर प्रदेश राज्य का एक जिला है, अयोध्या पहले फैजाबाद जिले का एक शहर था जो फैजाबाद मुख्यालय से लगभग 10 किलो मीटर की दूरी पर था। इस विकास के दौर में फैजाबाद और अयोध्या शहर दोनों एक हो गए और जिले का नाम बदलकर अयोध्या कर दिया गया। फैजाबाद रेलवे स्टेशन का नाम अयोध्या कैंट और अयोध्या रेलवे स्टेशन का नाम अयोध्या धाम कर दिया गया। अयोध्या शहर सरयू नदी (घाघरा) के किनारे पर स्थित है। अयोध्या हिंदुओं का प्रमुख धार्मिक स्थल है।

अयोध्या लखनऊ से 135 किलोमीटर प्रयागराज से 168 किलोमीटर वाराणसी से 219 किलोमीटर एवं गोरखपुर से 134 किलोमीटर की दूरी है। यहाँ बस और ट्रेन दोनों से यात्रा कर सकते हैं। यदि आप हवाई यात्रा से आना चाहते हैं तो महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अयोध्या तक यात्रा कर सकते हैं। यहाँ से श्री राम मंदिर की दूरी लगभग 12 किलोमीटर है।

अयोध्या का इतिहास : रामायण में अयोध्या को प्राचीन कौशल साम्राज्य की राजधानी बनाया गया इसलिए इसे कौशल भी कहा जाता है। अंग्रेजी में पुराना अवध या ओंड या और था। 1856 तक अवध स्टेट की राजधानी थी। आदि पुराण के अनुसार अयोध्या को अपनी शानदार इमारतों के कारण साकेत कहा जाता है।

रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी। मनु के बाद उनके पुत्र इक्ष्वाकु ने अयोध्या पर शासन किया। इक्ष्वाकु वंश के क्रम में श्री राम के पिता राज दशरथ अयोध्या के 63वें राजा थे। जैन धर्म के पंच तीर्थकरों का जन्म स्थल भी है अयोध्या। प्रथम ऋषभदेव जी का जन्म अयोध्या में हुआ था।

अयोध्या विवादः अयोध्या का विवाद बाबरी मस्जिद से घिरा हुआ था। 1528 में बाबर के सेनापति मीर बाकी ने बाबर के आदेश से अयोध्या में एक मस्जिद बनवाई, जो बाबरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध हुई। ऐसा माना जाता है कि यह मस्जिद मंदिर को तोड़कर बनवाई गई जिसके कारण हिंदू पक्ष और मुस्लिम पक्ष में विवाद उत्पन्न हो गया। बाबरी मस्जिद को लेकर 1855 पहले सांप्रदायिक दंगा हुआ। 1858 में निहंग सिखों के एक दल ने बाबरी मस्जिद के अंदर घुसकर हवन पूजा किया जिसके कारण विवाद बहुत बढ़ गया। 1859 में अंग्रेजी सरकार ने बीच में एक दीवार बनवा दी। एक तरफ हिंदू पक्ष के लिए दूसरी तरफ मुस्लिम पक्ष के लिए, फिर भी विवाद बढ़ता ही गया। 1885 में यह विवाद सर्वप्रथम कोर्ट में पहुंचा। महंत रघुवर दास जो निर्मोही अखाड़े से थे, ने राम चबूतरे पर राम मंदिर बनवाने के लिए याचिका दायर की।

सन 1936 में मुसलमान के दो प्रमुख समुदायों शिया और सुन्नी के बीच बाबरी मस्जिद को लेकर आपसी विवाद हो गया। मामला वक्फ बोर्ड पहुंचा,

वक्फ बोर्ड ने शिया समुदाय के दावों को खारिज कर दिया। 1947 के बाद बाबरी मस्जिद विवाद एक राजनीतिक मुद्दा बन गया। 1949 में हिंदू पक्ष ने विवादित स्थल पर श्री राम लला की मूर्ति मिलने का दावा किया। इस घटना के बाद हालात बहुत गंभीर हो गए। तत्काल प्रधानमंत्री ने बाबरी मस्जिद पर ताला लगवा दिया। 1950 में कोर्ट ने हिंदू पक्ष को विवादित स्थल के गेट के बाहर पूजा करने की अनुमति दी।

6 दिसंबर 1992 को कार सेवकों ने विवादित ढाँचे को गिरा दिया और अस्थायी राम मंदिर की स्थापना की गयी। जनवरी 1993 में सरकार ने विवादित जमीन को सरकारी जमीन घोषित कर दी। 30 सितंबर 2010 को एक ऐतिहासिक फैसला आया जिसके अनुसार निर्मोही अखाड़ा, सुन्नी वक्फ बोर्ड और श्री राम मंदिर में तीन बराबर भागों में जमीन बांट दी गई। फैसले से विवाद और बढ़ गया। कोर्ट ने आपसी सहमति बनाने के लिए बहुत कोशिश की, किंतु नाकाम रही।

नवंबर 2019 को पांच जजों की पीठ ने अपना फैसला हिंदू के पक्ष में सुनाया श्री राम के मंदिर को एक ट्रस्ट जरिये बनाया जाए। मुस्लिमों के मस्जिद बनाने के लिए 5 एकड़ जमीन कहीं और स्थल पर दिया जान इस फैसले को दोनों पक्षों ने स्वीकार किया।

5 फरवरी 2020 को मंदिर निर्माण के लिए ट्रस्ट बनाया गया। अगस्त 2020 में मंदिर निर्माण की आधारशिला रखी गई। 22 जनवरी 2024 को श्री राम मंदिर का उद्घाटन श्री राम लला की बाल रूप की मूर्ति स्थापना और श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

अयोध्या में स्थित दर्शनीय स्थल :

हनुमानगढ़ी– हनुमान जी का प्रसिद्ध मंदिर है यह दर्शन के लिए बहुत भीड़ होती है। इस मंदिर क्षेत्र में 76 सीढ़ियां पड़ती है।

कनक भवन– यह हनुमान गिरी के पास है। यहां राम और सीता की मूर्ति है।

राम की पैड़ी– सरयू नदी के तट पर घाटों की एक श्रृंखला है। शाम को यहां का दृश्य बहुत ही मनोरम होता है। यहां पर सरयू आरती की हर शाम को की जाती है। दीपावली के समय यहां दीपोत्सव मनाया जाता है। यहां श्रद्धालु सरयू नदी में स्नान करते हैं। यहाँ सरयू नदी में नौका विहार कर सकते हैं।

गुप्तार घाट– यह अयोध्या का प्रसिद्ध घाट है। यहाँ मंदिर और पार्क है। ऐसा माना जाता है श्री राम ने यहाँ पर जल समाधि ली थी।

अन्य दर्शनीय स्थल–जैन मंदिर, नागेश्वर मंदिर, सीता की रसोई, मणि पर्वत, तुलसी भवन, दशरथ भवन, गुलाब बाड़ी, बहु बेगम का मकबरा।

देश की किसी संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह 'भारत में' केवल हिन्दी ही हो सकती है।

– श्रीमती इंदिरा गांधी

ज़िंदगी से पहचान

श्री काशीनाथ चव्हाण
प्रवर श्रेणी लिपिक

ख्वाब सजाए जिम्मेदारियों का
एक पद सुखी जीवन का
समय के चक्र ने ख्वाबों का रुख मोड दिया
मेरा सब कुछ पीछे छूट गया।
फिर देखी जिंदगी की नई सुबह,
सुबह से शाम हुई शाम से सुबह,
सुबह हुई दफ्तर आया,
शाम हुई घर गया,
इन सब में मैंने सबको पाया,
सबको पाकर खुद को खोया।
फिर जब खुद को तलाशना चाहा
तो भीड़ में सबसे ऊपर खुद को पाया
खुद को पाकर अब
हर ख्वाब सच्चा नज़र आया
बदलते इन ख्वाबों ने मुझे दूसरों के काबिल बनाया
सपनों की महानगरी में कोई न था
लाखों की भीड़ में तन्हा था
अब जिंदगी को मैंने पहचाना
आया जो अब जिंदगी में उसे अपनाया
अब जिंदगी का असल अर्थ समझ आया।

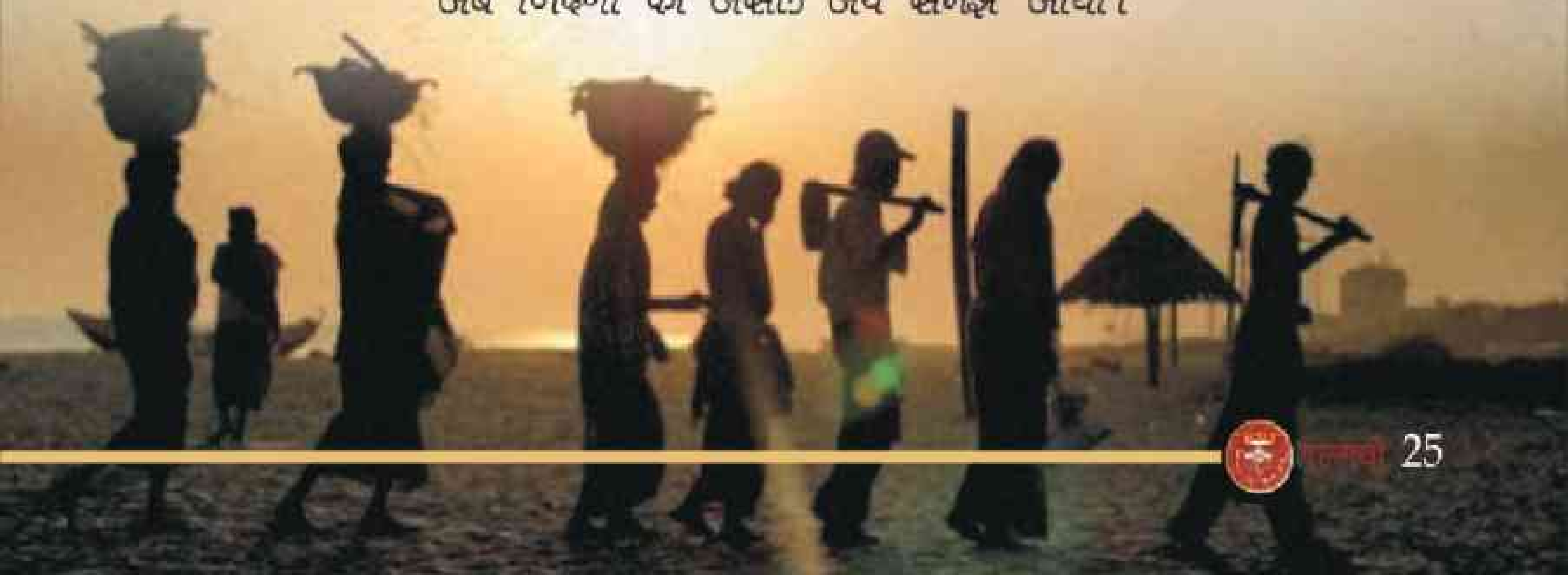

अनुवाद

अतिथि लेखकः–
सुश्री परांजपे, आसिया शेख,
सारिका नागर, अमरजीत पोद्दार,
आशीष यादव (मुंबई विश्वविद्यालय
के कला निष्णात् हिंदी) के विद्यार्थी

अनुवाद एक भाषा की सामग्री को किसी दूसरी भाषा की सामग्री में अंतरित करने का माध्यम है। अनुवाद मौलिक लेखन नहीं है, बल्कि मौलिक लेखन पर आधारित एक रचनात्मक साहित्यिक विधा है, शिल्प है, विज्ञान है, और अनुसृजन है। वह भाषांतरण की एक प्रक्रिया है। आधुनिक युग में अनुवाद के बिना मानव जाति का विकास असंभव है। अनुवाद के कारण ही हम आज आधुनिक विश्व, समाज या वैश्वीकरण इस सोच तक पहुंचे हैं।

अनुवाद में हम जब भी उसके सिद्धांत की बात करते हैं तो हमारे सामने मोटे तौर पर दो दृष्टिकोण सामने आते हैं। पहला परंपरागत दृष्टिकोण जहाँ हम देखते हैं कि अनुवाद को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता था। और दूसरा आधुनिक दृष्टिकोण जिसमें अनुवाद और अनुवादक को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। इसी दृष्टिकोण के आधार पर अनुवाद के सिद्धांत प्रतिस्थापित हैं, वे मुख्य रूप से इस प्रकार हैं; अर्थ संप्रेषण का सिद्धांत, व्याख्या सिद्धांत, समतुल्यता का सिद्धांत आदि। यह अनुवाद के मुख्य सिद्धांत हैं। इसके अलावा हमें कुछ और भी सिद्धांत प्राप्त हुए हैं, जैसे – युक्ति, प्रभावक्षमता, सांस्कृतिक ऐक्य और अनुकृति की अनुकृति सिद्धांत।

अनुवाद के प्रकारों का विभाजन कई कसौटियों पर किया जाता है। काव्यशास्त्रकरों ने "शब्द को काव्य का शरीर और अर्थ को काव्य की आत्मा बताया है। इसीलिए अनुवाद करते समय शब्द और अर्थ दोनों को लक्ष्य भाषा में भाषांतरित करना होता है। अनुवाद एक प्रायोगिक विधा हैं।" विद्वानों ने अपने–अपने अनुसार अनुवाद के कई भेद और उनके उपभेद बताएँ हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के संदर्भ में अनुवाद के प्रकार कुछ इस प्रकार हैं– गद्यत्व, पद्यत्व, साहित्यिक विधा, विषय और अनुवाद की प्रकृति। इनमें प्रथम तीन अपेक्षाकृत बाह्याधार हैं तथा अंतिम आंतरिक ; और इसीलिए यह कहना उचित होगा कि अन्य भेदों को लेकर देखेंगे तो यही अधिक सार्थक है। अनुवाद की गुणवत्ता एक बहुत महत्त्वपूर्ण पहलू है जिसे ध्यान में रखा जाना चाहिए। अनुवाद की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं, जिन्हें हमें ध्यान में रखना चाहिए। सटीकता और सामंजस्य, प्रवाहिकता और स्पष्टता, संस्कृत उपयुक्तता, प्रमाणिकता विश्वसनीयता तथा उद्देश्य और प्रयोजन की अनुरूपता। इन कारकों को ध्यान में रखकर किया गया अनुवाद गुणवत्तापूर्ण और प्रभावशाली होता है। अनुवादक को इन सभी पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए ताकि अंतिम अनुवाद उपयोगकर्ता के लिए उपयुक्त और संतोषजनक हो। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार जब अनुवाद ही गुणवत्ता का वर्गीकरण होता है तो अनुवाद को मुख्य रूप से पाँच श्रेणियों में बाँटा जाता है यह पाँच श्रेणियाँ इस प्रकार हैं 1. उत्कृष्ट, 2. अच्छा, 3. औसत एवं 4. निम्न स्तरीय 5. निरर्थक या अनर्थकारी अथवा निकृष्ट श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। इन संदर्भों में जब हम अनुवाद की गुणवत्ता पर चर्चा करेंगे तो पाएंगे कि इन कसौटियों के आधार पर हम किसी भी अनुवाद की गुणवत्ता को माप सकेंगे। आधुनिक युग में कंप्यूटरीकरण ने जीवन की व ज्ञान– विज्ञान की अनेक विधाओं को छुआ है। इस दिशा में कंप्यूटरीकृत अनुवाद एवं भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अनेक शोध हुए व आज कंप्यूटरीकृत अनुवाद तथा लिप्यांतरण विश्व की समस्त भाषाओं में उपलब्ध है। यह एक ऐसी तकनीक है, जिसका उद्देश्य भाषा की बाधाओं को दूर करना और विभिन्न भाषाओं के बोलने

वालों के लिए एक सामग्री को सुलभ बनाना है तथा एक भाषा में स्त्रोत पाठ लेने और दूसरी भाषा में समकक्ष पाठ तैयार करने, अर्थ और संदर्भ को यथासंभव सटीक रूप से संरक्षित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

निष्कर्ष : हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलने से पहले हमारी न्यायालयीय व्यवस्था में अंग्रेज़ी हावी थी, मुगल काल में उर्दू, अरबी और फारसी का बोलबाला था। अनुवाद की अनेक शैलियाँ होती हैं और हो सकती हैं, जो मूलकृति विषय, अनुवाद का पाठक या श्रोता अनुवाद का उद्देश्य तथा अनुवाद की व्यक्तिगत रुचि आदि पर निर्भर करती है।

अनुवाद की सर्वोत्तम शैली वही कही जाएगी जिसमें मूलभाषा के संबद्ध विधा की शैली मूलकृति की शैली, लक्ष्य भाषा में उस विधा की शैली, संभावित पाठकों के लिए उपयुक्त शैली तथा अनुवाद की अपनी अनुवाद शैली का समन्वय हो। अस्सी के दशक में कंप्यूटरों के बढ़ते प्रभाव के कारण कंप्यूटर व इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में कंप्यूटर अनुवाद भाषा प्रौद्योगिकी पर ज़्यादा ध्यान दिया जाने लगा है।

कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है।

– थास्मिस डेविस

क्या किया जाए....

श्री अंकित कुमार
अवर श्रेणी लिपिक

क्या किया जाए...
मकान जले तो बीमा ले सकते हैं,
सपने जले तो क्या किया जाए..
आसमान बरसे तो छाता ले सकते हैं,
आँख बरसे तो क्या किया जाए..
शेर दहाड़े तो भाग सकते हैं,
अहंकार दहाड़े तो क्या किया जाए..
काँटा चुभे तो निकाल सकते हैं,
कोई बात चुभे तो क्या किया जाए..
काँच टूटे तो बदल सकते हैं,
लेकिन दिल टूटे तो क्या किया जाए..
ट्रेन छूटे तो दूसरी पकड़ सकते हैं,
लेकिन घर छूटे तो क्या किया जाए..
कोई चीज खत्म हो जाए तो दूसरी खरीद सकते हैं,
लेकिन इंसानियत ही खत्म हो जाए तो क्या किया जाए..

एक घातक शस्त्र
चाइनीस मांजा

श्री मोहन सोनेकर
सहायक

आज ऐसे ही बैठा हूँ घर की बालकनी में। हाथ में वही चाय का कप और देख रहा हूँ आकाश की ओर पक्षियों की उड़ान, उसी उड़ान को देखते हुए हल्की– हल्की चाय की घूँट पी रहा हूँ। रिहायशी इलाका होने के कारण कबूतरों की संख्या काफी है। मनुष्य के अंदर अंधश्रद्धा की भावना कुछ ज़्यादा ही होती है तो वह इन कबूतरों को दाना डालने के काम को पुण्य–कर्म समझते हैं। हाँ यहाँ मैं जरूर कहना चाहूँगा कि मनुष्य की भावना एक–दूसरे से विपरीत हो सकती है। परंतु मनुष्य बस्ती पर आश्रित पंछियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हानि पहुंचाने का कार्य करते हैं, जो इनसे मुक्त रहते हैं।

वैसे तो बहुत सारी मानवनिर्मित चीजें भी हैं जो इन पंछियों को ज़्यादातर हानियाँ पहुँचाती हैं परंतु आजकल एक विदेश से अर्थात हमारा प्रतिद्वंद्वी, प्रतिस्पर्धी देश चीन जो खिलौने के नाम पर अदृश्य शस्त्र भेज रहा है, जिसमें से एक है चाइनीस मांजा। मैं यहाँ पर मेरा अपना अनुभव बताने की कोशिश कर रहा हूँ बात उस समय की है जब मैं शाखा कार्यालय वसई (मुंबई) में कार्यरत था। वैसे ही सुबह का समय था। बीमा धारकों का काम निपटाने के पश्चात मैं चाय पीते हुए शाखा कार्यालय की खिड़की से बाहर देख रहा था तो अचानक मेरी नज़र एक कबूतर पर पड़ी वह बिल्डिंग के पास के एक पेड़ पर किसी चीज से अटका हुआ लग रहा था। मुझे लगा कि शायद उसमें प्राण नहीं होंगे, परंतु अचानक एक दूसरे पंछी ने आकर उसे थोड़ा धक्का देने की कोशिश की और लटके हुए पंछी कबूतर ने अपने पंख को फड़काया। मैंने और गौर से इस दृश्य को देखा तो वह कबूतर एक छोर से लटका हुआ था।

मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि वह पतंग के चाइनीस मांजा से लटका हुआ था, और उसके पंख चाइनीस मांजा के कारण ज़ख्मी हो गये थे, क्योंकि ज़मीन से ऊपर करीब 30–35 फुट की ऊँचाई पर लटका होने के कारण और दो इमारतों (बिल्डिंग) के बीच होने के कारण शायद किसी का ध्यान नहीं गया होगा।

मैंने तुरंत मेरे सहकर्मी मुकेश कुमार जी को आवाज़ लगाई और नीचे की ओर गया, तब मुकेश जी भी नीचे की ओर आ गए थे। यह सब शाखा प्रबंधक श्री पंकज कुमार साहब को बताया। उन्होंने कहा सोनेकर जी, ज़रा संभलकर कबूतर को उतारें चाइनीस मांजा बड़ा तेज़ होता है। आदमी का गला काट जाता है इससे और कबूतर तो बड़ा नाज़ुक जीव है। जैसे ही हम नीचे की ओर गए हमारे साथ बिल्डिंग का वॉचमैन भी

आ गया। वह बोला— 'साहब आप इसे नीचे उतार रहे हैं, बड़ा अच्छा है यह दो दिन से लटक रहा है मैं सोच ही रहा था कैसे उतारें।

हमने एक और रस्सी का लंगोट बनाया और उसे कबूतर लटके हुए चाइनीस मांजा के धागे के साथ फँसाया एक—दो कोशिश में वह धागा पकड़ में आया और हम उसे धीरे—धीरे ही जहाँ से वह नीचे की ओर खींचने लगे। हमारी कोशिश कामयाब होने लगी। एक कदम से थोड़े वज़न के कारण धागा नीचे की ओर खिसक गया। हमने कबूतर को हाथ से पकड़—पकड़ कर नीचे उतारा। हमने देखा जो कबूतर के पंख तथा उसकी गर्दन मांजा के कारण ज़ख्मी हो चुकी थी तथा यह दर्द के कारण रघु दम गुमसुम हो गया था मुकेश जी ने एक कैंची तथा सब्जी काटने वाले चाकू की व्यवस्था की। कबूतर को भी शायद समझ में आया कि यह मानव लोग मुझे बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

चाइनीस मांझा उसके पंखुड़ियों में अंदर छुप गया था हमने धीरे—धीरे उसे कैंची और चाकू से काटकर अलग किया। और कबूतर को मुक्त किया योग के जख्म के कारण वह उड़ नहीं सकता था उसे वहीं पर वॉचमैन की निगरानी में छोड़कर हम अपने काम पर लौटे। लौटने के पहले हमने उसके लिए थोड़े दाने—पानी की व्यवस्था की थी।

शाम को जब हम उसे देखने गए तो वॉचमैन ने बताया साहब उसने दाना पानी खाया थोड़ा—थोड़ा पंख हिलाया थोड़ी देर तक आराम किया और अपने साथी के साथ उड़ चला। पंछी को तो चाइनीस मांजा से आजादी मिल गई।

अब मैं जब भी कोई कबूतर देखता हूँ तो मुझे लगता है कि कहीं ये वही तो नहीं जिसे मैंने चाइनीस मांजे से मुक्त कराया था।

जिंदगी का गणित

श्री मोहन सोनेकर
सहायक

मिला न खुदा न मिला प्यार,
वर्ग का क्षेत्रफल = भुजा स्क्वायर...

ना किसी से दोस्ती ना किसी से प्यार,
वृत्त की परिधि - $2\pi r$ (टू पाई आर)

नौकरी के चक्कर मे छोड़ दिया घर-बार,
वृत्त का क्षेत्रफल - πr^2 (पाई आर स्क्वायर).

प्यार में धोखा है, और है जुदाई,
त्रिभुज का क्षेत्रफल 1/2 X आधार x ऊंचाई...

अब तक किसी लड़की से हुआ न हमारा मैच,
बेलन का आयतन $\pi r^2 h$ (पाई आर स्क्वायर एच)

प्यार करना है एक सजा,
वर्ग का विकर्ण-. $\sqrt{2}$x भुजा (रूट टू X भुजा).

तुम न होगी तो कैसे कटेगा जीवन,
Sin 90 का मान होता है वन (1).

भीड़

श्री मुकेश कुमार दूबे
अवर श्रेणी लिपिक

एक–एक करता गया हर कोई इसमें प्रवेश,
तरह–तरह के लोगों से महक उठा ये पूरा परिवेश।
जब तक था तन्हा, ज़िन्दगी चहक रही थी
जब आये सारे तो ये ज़िंदगी महक रही थी।
किन्तु क्या ये जीव, मीमांसा रखता है?
एक बड़ी भीड़ की आकांक्षा,
हर बार इस जीवन संघर्ष में
शामिल होने पर एक नए जीव के,
ये तड़पता है, हिलोरें मारता है
और कहता है खुद से खुद ही,
ये चाह तो ना थी कि जीवन बन के रह जाये बस एक संघर्ष।
इसी भीड़ ने कर रखा है रक्तपात मानव विचारों का
यही बन बैठा है कारण समाज के व्यभिचारों का,
चाह कर भी इनसे दूर तो रहा नहीं जा सकता
पर ग्रसित हो जाये इनसे ये भी तो जरूरी नहीं।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज़्ज़त करता हूं, पर मेरे देश में हिंदी की इज़्ज़त न हो, ये मैं सह नहीं सकता।

–आचार्य विनोबा भावे

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान हिंदी प्रतियोगिता की झलकियाँ

कार्यालय में आयोजित हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी

महिला दिवस

दानशीलता हृदय का गुण है, हाथों का नहीं। –एडिसन

वि.रा.का.स. बैठक की झलकियाँ

गणतंत्र दिवस की झलकियाँ

मरोल कार्यालय में खेल-कूद स्पर्धा के विजेताओं का सम्मान

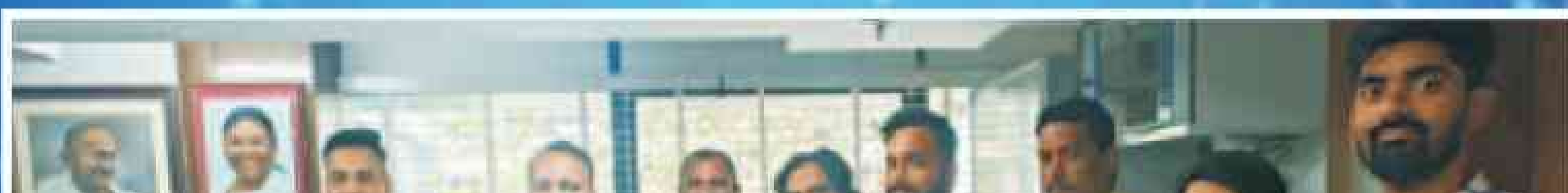

वाक्यानुवाद (हिंदी–मराठी)

हिंदी	मराठी
1. आगे चलो	पुढे चला
2. खाना हुआ?	जेवलास का?
3. क्या कर रहे हो?	काय करत आहेस?
4. ये सब्जी कितनी की दी	ही भाजी कितीला दिली
5. चाय लेके आओ	चहा घेऊन ये
6. कैसे हो?	कसा आहेस?
7. आप कहा से हो	तुम्ही कुठून आहात?
8. आपकी निंद पूरी हो गई?	तुमची झोप पूर्ण झाली?
9. मेरी मुंबई, हमारी मुंबई	माझी मुंबई, आमची मुंबई
10. आज बस में बहुत भींड़ थी	आज बस मध्ये खूप गर्दी होती
11. मुंबई की लोकल ट्रेन और बारिश इस महानगर की पहचान है	मुंबई ची रेल्वे आणि पाऊस ही ह्या महानगराची ओळख आहे
12. कल मिलते है!	उदया भेटूया!
13. आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई	तुम्हाला भेटून आनंद झाला
14. मैं आधे घंटे में आऊँगी	मी अर्ध्या तासात येईन
15. क्या आप मराठीभाषी हैं?	तुम्हा मराठी भाषिक आहात का?
16 मैं मुंबई में रहता हूँ	मी मुंबईत रहतो
17 आपकी मातृभाषा क्या है?	तुमची मातृभाषा कोणती आहे?
18 बस! किसी तरह दिन कट रहा है।	बस! चाललेत कसे तरी दिवस
19 टैक्सी में कितने लोग बैठे सकते हैं?	टैक्सी मध्ये किती जण बसू शकतात?
20 गाड़ी कितने देर तक रुकेगी?	गाडी किती वेळ पर्यंन थांबेल?
21 मुझे हस्ताक्षर चाहिए	मला स्वाक्षरी हवी आहे
22 आपसे बात करनी है	तुमच्याशी बोलायच आहे
23 ये बस रेलवे स्टेशन जाती है ?	ही बस रेल्वे स्टेशन ला जाणार आहे का?
24 हम आभारी हैं।	आम्ही आभारी आहोत

शब्दानुवाद (मराठी-हिंदी)

1	इकड़े	इधर
2	तिकड़े	उधर
3	वरती	ऊपर
4	खाली	नीचे
5	डावा	बायां
6	उजवा	दायां
7	परवा	परसो
8	काल	कल
9	सकाळ	सुबह
10	दुपार	दोपहर
11	संध्याकाळ	शाम
12	अजिबात	बिलकुल
13	केवळ	केवल
14	लवकर	शीघ्र
15	नारळ	नारियल
16	दफ़्तर	कार्यालय
17	विद्यापीठ	विश्वविद्यालय
18	मुंबई	मुंबई
19	जवळपास	नज़दीक
20	समोर	सामने
21	शुभेच्छा	शुभकामना
22	रुग्णालय	चिकित्सालय
23	ओळख	पहचान
24	ग्रंथालय	पुस्तकालय
25	आठवडा	सप्ताह
26	पूर्णपणे	पूरी तरह
27	बाजूला	बाजू में
28	आजचे काम	आज का काम
29	रास्ता	सड़क
30	चव	स्वाद
31	आधी	पहले
32	नंतर	बाद में
34	आभार	धन्यवाद
35	नमस्कार	नमस्ते

मूल हिंदी टिप्पणी आलेखन प्रतियोगिता के तहत पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची

1	आस्था कान्त	सहायक	रोकड़ शाखा	प्रथम	5000/-
2	कुन्दन कुमार	सहायक	बीमा -4	प्रथम	5000/-
3	मोहन बापुराव सोन्नेकर	सहायक	बीमा -1	द्वितीय	3000/-
4	मुकेश कुमार	सहायक	प्रशासन शाखा	द्वितीय	3000/-
5	वीर अभिमन्यु सिंह	सहायक	प्रशासन शाखा	द्वितीय	3000/-
6	मनोज हु. यादव	सहायक	लोक शिकायत कक्ष	तृतीय	2000/-
7	अंकुश बापुराव भूयार	सहायक	बीमा -6	तृतीय	2000/-
8	प्रवीण कुमार	सहायक	बीमा -4	तृतीय	2000/-
9	दीपक यादव	सहायक	बीमा -3	तृतीय	2000/-
10	लौकेश कुमार	सहायक	सामान्य शाखा	तृतीय	2000/-

हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना के तहत वर्ष–2023 के अंतर्गत प्रोत्साहन पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची।

1	रक्षा राजपुरोहित	अधीक्षक	प्रशासन शाखा	600/–
2	वीर अभिमन्यु सिंह	सहायक	प्रशासन शाखा	600/–
3	मुकेश कुमार	सहायक	प्रशासन शाखा	600/–
4	आकाश पोळ	सहायक	प्रशासन शाखा	600/–
5	आशिष कुमार प्रधान	उ.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा	600/–
6	राहुल गणवीर	उ.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा	600/–
7	योगेश गौतम खैरे	नि.श्रे.लि.	प्रशासन शाखा	600/–
8	रामा शंकर दास	उ.श्रे.लि.	वित्त एवं लेखा शाखा	600/–
9	रोशन सुरेश काटोले	सहायक	हितलाभ शाखा	600/–
10	दीपक कुमार	सहायक	हितलाभ शाखा	600/–
11	दिलीप आर. गावीत	सहायक	हितलाभ शाखा	600/–
12	राहुल पारसनाथ परदेशी	सहायक	हितलाभ शाखा	600/–
13	हर्षिता श्रीवास्तव	उ.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा	600/–
14	रेश्मा राजन	उ.श्रे.लि.	हितलाभ शाखा	600/–
15	पंकज दी पाटील	सहायक	विधि शाखा	600/–
16	कु. शिवि	आशुलिपिक	विधि शाखा	600/–
17	रवि कान्त कुमार	सहायक	विधि शाखा	600/–
18	पुष्पा सुब्रमणियन	सहायक	रोकड़ शाखा	600/–
19	एकता कुमारी	सहायक	रोकड़ शाखा	600/–
20	संदीप बागड़े	सहायक	रोकड़ शाखा	600/–
21	आस्था कान्त	सहायक	रोकड़ शाखा	600/–
22	अरुण कुमार	नि.श्रे.लि.	रोकड़ शाखा	600/–
23	मनोज कुमार डोंगरे	अधीक्षक	सामान्य शाखा	600/–
24	तिरुपति पटनाईक	सहायक	सामान्य शाखा	600/–
25	राकेश कुमार	सहायक	सामान्य शाखा	600/–
26	लोकेश कुमार	सहायक	सामान्य शाखा	600/–
27	मनीष कुमार	उ.श्रे.लि.	सामान्य शाखा	600/–
28	तनवीर आलम	सहायक	वसूली शाखा	600/–
29	सुमंत कुमार	सहायक	वसूली शाखा	600/–
30	दिवाकर कुमार सिंह	सहायक	वसूली शाखा	600/–
31	आदर्श राज	उ.श्रे.लि.	वसूली शाखा	600/–
32	श्वेता सु. गावड	अधीक्षक	लोक शिकायत कक्ष	600/–

33	मनोज हु. यादव	सहायक	लोक शिकायत कक्ष	600/–
34	रत्नेश कुमार	उ.श्रे.लि.	लोक शिकायत कक्ष	600/–
35	प्रमोद कुमार लोखड़े	सहायक	बड़ा नियोजक कक्ष	600/–
36	कु. प्रिया कुमारी	उ.श्रे.लि.	बड़ा नियोजक कक्ष	600/–
37	अदिति सरकार	अधीक्षक	बीमा –1	600/–
38	पुर्णिमा रेशांत शाह	सहायक	बीमा –1	600/–
39	अमित कदम	सहायक	बीमा –1	600/–
40	रितेश शां. गोवळकर	सहायक	बीमा –1	600/–
41	देवेंद्र ग. साळुंके	सहायक	बीमा –1	600/–
42	निलेश भगवान पवार	सहायक	बीमा –1	600/–
43	आकाश चंद्रकांत बारापात्रे	उ.श्रे.लि.	बीमा –1	600/–
44	रणधीर कुमार	उ.श्रे.लि.	बीमा –1	600/–
45	मंगेश कारभारी चौधरी	उ.श्रे.लि.	बीमा –1	600/–
46	अमृता कुमारी	उ.श्रे.लि.	बीमा –1	600/–
47	दर्शना मेंढे	उ.श्रे.लि.	बीमा –1	600/–
48	अजय दत्तात्रय लटपटे	उ.श्रे.लि.	बीमा –1	600/–
49	रवीन्द्र यशवंत शिंदे	सहायक	बीमा –2	600/–
50	प्रशांत नंदलाल गेडाम	सहायक	बीमा –2	600/–
51	संजीत कुमार गुप्ता	सहायक	बीमा –2	600/–
52	सच्चिदानन्द पटेल	सहायक	बीमा –2	600/–
53	अरविन्द कुमार अभिषेक	सहायक	बीमा –2	600/–
54	सकेन्द्र कुमार शर्मा	सहायक	बीमा –2	600/–
55	आदेश संजय रिठे	उ.श्रे.लि.	बीमा –2	600/–
56	अंकित कुमार	नि.श्रे.लि.	बीमा –2	600/–
57	हर्षदा कि. शेलार	सहायक	बीमा –3	600/–
58	दीपक यादव	सहायक	बीमा –3	600/–
59	दिगम्बर सिंह	उ.श्रे.लि.	बीमा –3	600/–
60	अजित सिंह	उ.श्रे.लि.	बीमा –3	600/–
61	निशांत कुमार	सहायक	बीमा –4	600/–
62	प्रवीण कुमार	सहायक	बीमा –4	600/–
63	मनीष कुमार	सहायक	बीमा –4	600/–
64	प्रवीण प्रमोद नाईक	सहायक	बीमा –4	600/–
65	हनी प्रिया	उ.श्रे.लि.	बीमा –4	600/–
66	प्रमोद कुमार सिंह	उ.श्रे.लि.	बीमा –4	600/–
67	अविनाश कुमार द्विवेदी	उ.श्रे.लि.	बीमा –4	600/–

68	विवेक कुमार	नि.श्रे.लि.	बीमा –4	600/–
69	रिशिका कालोनिया	अधीक्षक	बीमा –5	600/–
70	जितेन्द्र सिंह यादव	सहायक	बीमा –5	600/–
71	धनराज मीना	सहायक	बीमा –5	600/–
72	संतोष परशुराम मोरे	सहायक	बीमा –5	600/–
73	दिपेन्द्र गजानन गडीकर	सहायक	बीमा –5	600/–
74	तरुण कुमार	उ.श्रे.लि.	बीमा –5	600/–
75	रितेश कुमार	सहायक	बीमा –6	600/–
76	अंकुश बापुराव भूयार	सहायक	बीमा –6	600/–
77	सुधा कुंभारे	सहायक	बीमा –6	600/–
78	भूषण शरद सोनावणे	उ.श्रे.लि.	बीमा –6	600/–
79	संतोष श्रीकांत अभंग	उ.श्रे.लि.	बीमा –6	600/–
80	चिन्नाला राजशेखर	उ.श्रे.लि.	बीमा –6	600/–
81	गरिमा आहूजा	अधीक्षक	बीमा –7	600/–
82	बिभा नि. नंदेश्वर	सहायक	बीमा –7	600/–
83	सुनील कुमार	उ.श्रे.लि.	बीमा –7	600/–
84	गणपत मधुकर कालित	सहायक	बीमा –8	600/–
85	चैतन्य श्याम फाटे	उ.श्रे.लि.	बीमा –8	600/–
86	अंजली धनोतिया	उ.श्रे.लि.	बीमा –8	600/–
87	नितीश कुमार	उ.श्रे.लि.	शा.का.साकिनाका	600/–
88	प्रशांत पटेल	उ.श्रे.लि.	शा.का.साकिनाका	600/–
89	ललित कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.साकिनाका	600/–
90	कुन्दन कुमार	सहायक	शा.का.इर्ला	600/–
91	विवेक कुमार	सहायक	शा.का.इर्ला	600/–
92	रोहित जैन	उ.श्रे.लि.	शा.का.इर्ला	600/–
93	रोहित कुमार	उ.श्रे.लि.	शा.का.इर्ला	600/–
94	राहुल कुमार उपाध्याय	सहायक	शा.का.मरोल	600/–
95	सतीश म. खंडारे	सहायक	शा.का.मरोल	600/–
96	पुजा सेतिया	उ.श्रे.लि.	शा.का.मरोल	600/–
97	रविरंजन कुमार	सहायक	शा.का. गोरेगांव	600/–
98	मोहन बापुराव सोन्नेकर	सहायक	शा.का. गोरेगांव	600/–
99	मंदीप कुमार भारती	उ.श्रे.लि.	शा.का. गोरेगांव	600/–
100	नवनीत कुमार	उ.श्रे.लि.	शा.का. गोरेगांव	600/–
101	शुभम पाटील	उ.श्रे.लि.	शा.का. गोरेगांव	600/–
102	कुन्दन कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का. गोरेगांव	600/–

103	सुषमा शेट्टी	सहायक	शा.का.मीरा रोड	600/–
104	श्रावणी आजगावकर	सहायक	शा.का.मीरा रोड	600/–
105	रितुराज चौधरी	उ.श्रे.लि.–खजाची	शा.का.मीरा रोड	600/–
106	आकांक्षा सिंह	उ.श्रे.लि.	शा.का.मीरा रोड	600/–
107	आशिष कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.मीरा रोड	600/–
108	यशवंत कुमार	सहायक	शा.का.वसई	600/–
109	मुकेश कुमार	सहायक	शा.का.वसई	600/–
110	संतोष कुमार	सहायक	शा.का.वसई	600/–
111	पवन कुमार	सहायक	शा.का.वसई	600/–
112	शंकदीप उरकूड़ा महेर	उ.श्रे.लि.	शा.का.वसई	600/–
113	मयूर घोंडने	उ.श्रे.लि.	शा.का.वसई	600/–
114	हितेश दत्ता हानवते	उ.श्रे.लि.	शा.का.वसई	600/–
115	अभिषेक कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.वसई	600/–
116	प्रकाश कुमार	उ.श्रे.लि	शा.का.कांदिवली	600/–
117	विकाश कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.कांदिवली	600/–
118	अमित कुमार	उ.श्रे.लि	शा.का.बोरीवली	600/–
119	मुकेश कुमार दुबे	नि.श्रे.लि.	शा.का.बोरीवली	600/–
120	निखिल कुमार	उ.श्रे.लि	हितलाभ शाखा (पथांतरण)	600/–
121	मिथिलेश कुमार	उ.श्रे.लि	हितलाभ शाखा (पथांतरण)	600/–
122	देबाशिष बेहेरा	उ.श्रे.लि	हितलाभ शाखा (पथांतरण)	600/–
123	मेजर कुमा	उ.श्रे.लि	हितलाभ शाखा (पथांतरण)	600/–
124	राज प्रकाश कुमार	सहायक	हितलाभ शाखा (पथांतरण)	600/–
125	योगेश पाटिल	सहायक	शा.का.अंधेरी	600/–
126	अनुराग कुमार	नि.श्रे.लि.	शा.का.अंधेरी	600/–

आपकी प्रतिक्रियाएँ

महोदय,

आपके कार्यालय में हिन्दी भाषा की प्रगति को मुखरता से व्यक्त करती हिन्दी गृह पत्रिका 'पल्लवी' के अंक–10 की प्राप्ति हुई। हार्दिक धन्यवाद ।

निगम के विभिन्न हितलाभों को दर्शाता पत्रिका का आवरण पृष्ठ सार्थक है। आतंरिक साज–सज्जा व चित्रांकन उद्देश्यपरक एवं मनमोहक है। श्रीमती निर्मला का विचारणीय कथ्य 'स्त्री के मन की गाँठ' एवं सुश्री रेणु खरे, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी की कविता 'मारीच' आदि रचनाओं ने पत्रिका को स्तरीय बना दिया है। समग्र रूप से सभी रचनाएँ सारगर्भित एवं विचारणीय हैं जिन्होंने पत्रिका को उत्कृष्टता प्रदान की है।

पत्रिका संपादक–मण्डल को हार्दिक बधाई । अगले अंक की प्रतीक्षा में...

आपका,

(दीपक मलिक)
उप निदेशक व कार्यालय प्रभारी

विषय : राजभाषा गृह पत्रिका 'पल्लवी' के अंक–10, वर्ष 2022–23 के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका 'पल्लवी' का दसवां अंक प्राप्त हुआ। जिसके लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में छपे सभी लेख प्रशंसनीय हैं। वर्ष 2019–2020 में 'ख' क्षेत्र में गृह पत्रिका 'पल्लवी' को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई। 'हिंदी में संयुक्त वर्ण', 'आज़ादी की रह पर', 'मेरा भारत क्यों महान है' विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र कार्यालय की विविध गतिविधियों पर विस्तृत प्रकाश डालते हैं। आशा है आगे भी यह पत्रिका इसी तरह राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में योगदान देती रहेगी। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन के लिए बधाई ।

भवदीय,
विकास कुंडल
दिनांक 10.01.2024 03:48:22
उप निदेशक (प्रभारी)

महोदय / महोदया,

आपके पत्र सं. 35 ए / 49 / 12 / 2011–रा.भा. दिनांक 28.05.2023 द्वारा भेजी गई पत्रिका की प्रति हमें प्राप्त हुई। पत्रिका के 10 वें अंक के लिए बधाई द्य

पत्रिका में समाहित समस्त सामग्री विविधमुखी व रोचक है। स्त्री के मन की गांठ (श्री दीपक यादव), मेरी जीवन संगिनी (श्री अनुराग कुमार), संयुक्त परिवार का महत्त्व (श्री अंकित कुमार), स्वानुभाव–किडनी दान–जीवन दान (श्रीमती विजया सुभाष साठे) तथा सुश्री सुमन प्रजापत द्वारा लिखित कविता (साथ) आदि रचनाएँ काफी सराहनीय, शिक्षाप्रद व पठनीय हैं।

अधिकतर लेख एक–दूसरे से बढ़ कर हैं। प्रकाशन से जुड़े सभी सज्जनों को अभिनंदन। अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,
रवी नायक बीआर
दिनांक : 20.12.2023 1453.4)
(सह राजभाषा प्रभारी)

कार्यालय की गतिविधियां अखबार की सुर्खियों में

ईएसआईसी में हिंदी कार्यशाला

■ **मुंबई,** नवभारत न्यूज नेटवर्क. कर्मचारी बीमा निगम (ईएसआईसी) के मरोल स्थित उप क्षेत्रीय कार्यालय में मंगलवार को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में कुल 20 कर्मचारियों ने भाग लिया. इसका आयोजन भारत सरकार के राजभाषा विभाग तथा मुख्यालय द्वारा जारी समय-समय पर जारी अनुदेशों के अनुसरण में कार्यालय प्रमुख अभिलाषा झा के निर्देशानुसार किया गया है. कार्यालय में हिंदी एवं राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निगम के उप निदेशक प्रसून कुमार सिन्हा ने हितलाभ में प्रयुक्त शब्दावली, मसौदों का अभ्यास करवाया. सहायक निदेशक (राजभाषा) अभिनव प्रकाश ने संघ की राजभाषा नीति, हिंदी आई.टी.टूल्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ई-ऑफिस में हिंदी में कार्य विषयों पर अभ्यास करवाया.

मैं स्वयं और अपने परिवार के लिए आधार को कैसे सीड कर सकता हूं

नियोक्ता के पास जाएं

ईएसआईसी शाखा कार्यालय जाएं

AAA + एप के माध्यम से

स्वयं द्वारा आधार सीडिंग

IP पोर्टल से https://esic.gov.in पर लॉगिन करें।

1. आधार सीडिंग पर क्लिक करें
2. नियोक्ता को चुने
3. आधार सीड करने के लिए चुने
4. नियम और शर्तों पर सहमति दे और आधार नंबर दर्ज करें
5. ओ. टी. पी. की पुष्टि करें
6. अगर आधार डाटा मेल खाता हैं तो आधार सीड हो जाएगा

गूगल प्लेस्टोर से AAA+ App डाउनलोड करें

1. IP टेब पर क्लिक करें
2. IP नंबर डालें
3. ओ. टी. पी. डालें
4. IP सिलेक्ट करें और खुद के और परिवारजनों के आधार नंबर डाले
5. पुनः ओ. टी. पी. डालें
6. नियोक्ता कोड चयन करें और Proceed बटन पर क्लिक करें
7. अगर आधार डाटा मेल खाता हैं तो आधार सीड हो जाएगा

ध्यान दें: यदि डाटा मेल नहीं खाता है तो नियोक्ता से सत्यापन के लिए स्वतः रूप से एक अनुरोध सृजित होगा जो अनुमोदन के लिए शाखा कार्यालय भेजा जायेगा। एक बार सत्यापित होने एवं अनुमोदित हो जाने पर आधार सीड हो जायेगा और **ABHA** नंबर सृजित हो जायेगा।

Design and Printed by : Indu Cards & Graphics, Mob: 9811419531